अप्रैल-२०२५ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
अप्रैल-२०२५

**आर्यसमाज हमारा प्यारा, मानवता का बना सहारा।
विश्वभर में फैला रहा यह, सत्य धर्म ज्ञान उजियारा॥**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १५

१६२

योग के साथ - साथ ताज़ा और शुद्ध खाना भी है ज़रूरी
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
GARAM MASALA
SAMBHAR MASALA
CHANA MASALA
KITCHEN KING
SHAHI PANEER MASALA
KASHMIRI MIRCH
CHUNKY CHAT MASALA
RAJMAH MASALA
SABZI MASALA
DEGGI MIRCH
PEACOCK KASOORI METHI
PAV BHAJI MASALA
VEG BIRYANI MASALA
KARAHI PANEER MASALA
JAL JEERA MASALA
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

April - 2025

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २१

०४	वेद सुधा
०६	जादूगर आँचल द्वारा नवलखा अवलोकन
१४	वीर कुंवर सिंह
१६	आर्यसमाज समाज सुधारक संस्था है
१९	सत्यार्थ मित्र बनें
२०	कर्ज तो चुकाना ही पड़ता है
२४	अत्यन्त लाभप्रद वनौषधि 'अर्जुन'
२८	गाँधीधाम द्वारा आर्यों के तीर्थ की यात्रा

हलचल ३०

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १३ | अंक - १२ | मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

संसाररूपी नदी

अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥ - यजुर्वेद ३५/१०

शब्दार्थ– **अश्मन्वती-** पत्थरोंवाली {नदी} **रीयते-** वेग से बह रही है। **संरभध्वम्-** तुम संवेग से एकमत होकर कार्य करो। **उत्तिष्ठत-** उठ खड़े होओ। **सखायः-** सखा बनकर **प्रतरत-** पार कर जाओ। **ये अशिवा असन्-** जो अशिव हैं **अत्र जहीमः-** {उनको} हम यहीं छोड़ जाएँ। **वयम् शिवान् वाजान्-** हम कल्याणकारी वाजों को, क्रियाओं को **अभि-** सामने रखकर **उत् तरेम=** पार उतर जाएँ।

व्याख्या

वेद में संसार को कहीं वृक्ष, कहीं सागर और कहीं किसी और रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ संसार को अश्मन्वती= पथरीली नदी के रूप में पेश किया गया है, किन्तु आदेश है कि इसे पार करो। भवसागर को पार करने की बात हमारे साहित्य में अनेक स्थानों पर है। यहाँ संसार को पथरीली नदी कहने का विशेष प्रयोजन है। पथरीली नदी साधारणतया पार्वत्य प्रदेशों में हुआ करती है। उसके प्रवाह में बहुत वेग होता है। थोड़ा होने पर भी बहाव में इतना वेग होता है कि बड़े-बड़े हाथी भी उसमें घुसने से झिझकते हैं। मनुष्य- जैसे दुर्बल प्राणी तो स्वाभाविक ही उससे भयभीत होते हैं।

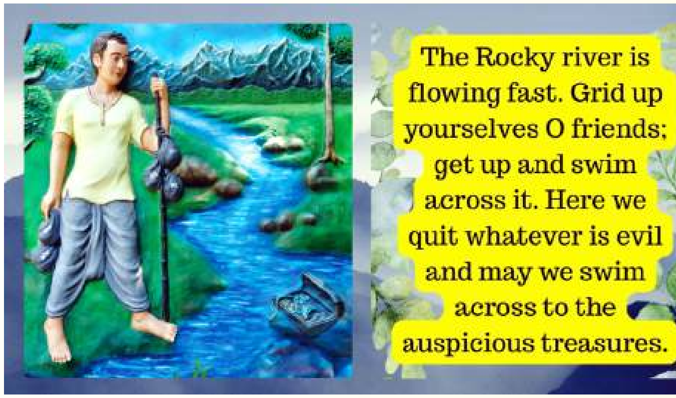

साधारणतया ऐसी नदी में जल इतना थोड़ा होता है कि इनमें पोत या नौका चल नहीं सकती। नदी को पार करने का साधन नहीं, किन्तु पार अवश्य जाना है। उसके लिए वेद पहला साधन बताता है।-

संरभध्वम्= तुम संवेग से एकमत होकर कार्य करो।

अर्थात् पथरीली, वेग से बहनेवाली नदी को पार करने के लिए तुममें भी संवेग होना चाहिए। किसी कार्य के लिए जब तक व्यग्रता न हो, व्याकुलता न हो, संवेग न हो, उस कार्य की सिद्धि असम्भव है। जिस कार्य के लिए जितनी व्याकुलता अधिक होगी, व्यग्रता प्रचण्ड होगी, संवेग तीव्र होगा, उतनी ही उस कार्य की सिद्धि आसन्न= समीप होगी। योगदर्शन में चित्तवृत्तिनिरोध का प्रमुख उपाय अभ्यास और वैराग्य बताकर कहा है-

तीव्रसंवेगानामासन्नः। - समाधिपाद, २१

तीव्र संवेगवालों के लिए चित्तवृत्तिनिरोध समीप होता है।

किसी कार्य की सिद्धि के लिए उपाय मृदु, मध्य और तीव्र हो सकते हैं। फिर इन मृदु, मध्य और तीव्र के तीन-तीन भेद हो सकते हैं- मृदुमृदु, मध्यमृदु, अधिमात्रमृदु, मृदुमध्य, मध्यमध्य, अधिमात्रमध्य, मृदुतीव्र, मध्यतीव्र तथा अधिमात्रतीव्र। अधिमात्रतीव्र संवेगवालों के लिए सिद्धि आसन्नतम होती है।

संवेग का अर्थ केवल जोश ही नहीं, वरन् विवेकपूर्वक वेग। अपने उद्देश्य का ज्ञान हो और उसके साथ धैर्ययुक्त जोश हो।

केवल विवेक और वेग से कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। बहुत-से विवेकी बैठे ननुनच में ही जीवन बिता देते हैं। अनेक जोशीले जन जोश से बातें करने में सारे सामर्थ्य को अकारथ कर देते हैं, अतः वेद ने दूसरा उपाय बताया-

उत्तिष्ठत= उठ खड़े होओ ।

उठ खड़े होने का तात्पर्य बहुत विस्तृत है। निद्रा-आलस्य-प्रमाद का त्याग करके कार्य में लग जाओ और तब तक कार्य से उपराम न होओ, जब तक कि कार्य की सिद्धि न हो जाए।

जैसाकि कठोपनिषद् २/३/१४ में कहा है-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

'उठो, जागो, उत्तम पदार्थ प्राप्त करके नितरां ज्ञानयुक्त होओ। यह मार्ग छुरे की तीक्ष्ण और दुर्लंघ्य धारा के समान दुर्गम है, ऐसा ज्ञानीजन कहते हैं।'

वेद ने **'अश्मन्वती रीयते'** कहा, उपनिषत् ने **'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया'** कहा। बात एक ही है, शब्द भिन्न-भिन्न हैं।

किन्तु इसके लिए एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि अकेले इस नदी को पार नहीं कर सकते। इसके लिए अपने समान विचार-आचारवान् लोगों की मण्डली बनानी होगी। वेद समानाचार-विचारवान् को 'सखा' कहता है। इसकी आवश्यकता यों है कि एक सद्गृहस्थ अपना घर अत्यन्त स्वच्छ रखता है, किसी प्रकार का मल आदि उसमें नहीं रहने देता, दोनों समय श्रद्धायुक्त होकर विधि-विधान से अग्निहोत्र- हवन भी करता है, परन्तु उसके घर के आसपास के घर बड़े मलिन और गन्दे रहते हैं। यदि उन घरों की गन्दगी के कारण कभी उस ग्राम या मुहल्ले में विषूचिका, महामारी या अन्य कोई संक्रामक रोग उठ खड़ा हुआ तो निश्चय जानिए, उस सदा स्वच्छ रक्खे जानेवाले घर में भी उस मारक रोग का प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

और दृष्टान्त लीजिए और आजकल का दृष्टान्त लीजिए। कॉलेजों में छात्र पढ़ने आते हैं, कॉलेज में प्रविष्ट होने से पूर्व उनमें से अनेक श्रद्धापूर्वक सन्ध्यादि नित्यकर्म करते हैं, किन्तु कॉलेज के वातावरण में आकर वे भी छोड़ बैठते हैं, क्योंकि उनमें उपहास सहने का बल नहीं होता। यदि समान विचारवालों की एक मण्डली हो, अर्थात् साधक अकेला न रहकर अपने विचारवालों का एक संघ बना ले, तो साधना में सरलता तथा सुभीता रहता है। समान विचारवाले सखा परस्पर एक-दूसरे की सहायता करते हुए ऊपर उठ जाते हैं, जैसा कि कहा भी है-

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।

एक-दूसरे की सहायता करते हुए परम कल्याण को प्राप्त होओ।

मित्र अपने मित्र को गिरने नहीं देता। वेद कहता है-

सखा सखायमतरद्विषूचोः- मित्र-मित्र को विषमता से बचाता है।

इस प्रकार मित्र-मण्डल बनाकर संसार-नदी को पार कर जाओ ।

नदी पार करने में बोझा बड़ी रुकावट होता है, अतः वेद कहता है-

अत्रा जहीमोऽशिवा येऽ असन्- 'जो दोष हैं, अमंगल हैं, दुरित हैं, उन सबको हम यहीं छोड़ते हैं।'

काम-क्रोधादि दुर्व्यसन अशिव हैं, उनको छोड़े बिना शिव की, कल्याण की प्राप्ति नहीं हो सकती। अमंगल को त्यागने से शिवप्राप्ति स्वतः हो जाएगी।

संकलनकर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जादूगर आँचल ने किया नवलखा महल का अवलोकन

विस्मित हो बोलीं– 'आपने सही लिखा है कि नवलखा नहीं देखा तो मानो कुछ भी नहीं देखा।'

शाम को गुलाबबाग घूमने आई आंचल अनायास नवलखा महल में पधारीं और यहाँ की संस्कार वीथिका एवं मिनी थिएटर में पृथ्वीराज चौहान का जीवन दर्शन देखकर उन्होंने इस प्रकल्प की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। क्या कुछ कहा संक्षेप में प्रस्तुत है।

'आज यूँ ही गुलाबबाग घूमने आई तो यहाँ मैंने सामने बैनर देखा- नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर और उस पर एक लाइन है जो मुझे सबसे ज्यादा अट्रैक्ट कर गई कि 'यह नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा।' सोचा ट्राई करते हैं। जगह-जगह साइन बोर्ड लगे हुए थे सबको फॉलो करते हुए आई और आने के बाद मिनी थिएटर में पृथ्वीराज चौहान जी का वीडियो देखा उनकी हिस्ट्री के बारे में जाना। यहाँ हमारे १६ संस्कारों को दिग्दर्शित करती हुई एक बहुत सुन्दर वीथिका बनी है जिनके बारे में हमारी दुर्गा जी ने बहुत अच्छे से मुझे एक्सप्लेन किया कि हमारा देश क्यों विश्व गुरु था, क्यों सोने की चिड़िया कहा जाता था, यह हमारा देश इतना महान् क्यों था? सबसे बड़ा रीजन यही है कि हमारे देश का एजुकेशन सिस्टम हमारी जो शिक्षा प्रणाली थी, हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति वह बहुत अलग थी। बीच के लम्बी गुलामी के काल में कह सकते हैं उस समय से हमारा सब कुछ सिस्टम चेंज कर दिया और हम धीरे-धीरे वेस्टर्नाइजेशन की तरफ जाने लगे । तो मैं तरस रही थी ऐसी चीज समझने के लिए, जानने के लिए, अवसर आज मिला।

वे आगे कहती हैं आज संस्कारों की बात कहीं पीछे रह गई है। भौतिकता की चकाचौंध में आज का युवा भटक रहा है और समझता है कि जितना ज्यादा वह आधुनिक संस्कृति से जुड़ता है उसका कद बढ़ता है, जबकि वास्तविकता इसके उलट है।

सच्चाई यह है कि हम उलटी दिशा में जा रहे हैं। हमारी अपनी संस्कृति को नहीं अपना रहे हैं। मैं न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक जी और जो भी इस नवलखा महल के टीम मेंबर्स हैं कमिटी मेंबर्स हैं, सभी को धन्यवाद देना चाहूँगी कि आप वह चीज लेकर आए हैं जो हमारे देश की जरूरत है।'

तो मैं आप सभी से आग्रह करना चाहूँगी ज्यादा से ज्यादा संख्या में यहाँ आएँ। ऐसा नहीं कि आप बड़े हो गए तो आपको अब आवश्यकता नहीं, अथवा आप बच्चे हैं तो अभी ऐसे स्थल पर आने में देर है। बच्चों को यहाँ अवश्य लाना चाहिए, क्योंकि बीज बचपन में डाला जाता है। आपको गर्व होगा कि हमारा जन्म महान् भारत भूमि में हुआ है। प्लीज यहाँ पर जानिए। मेरे लिए नहीं या मैं कह रही हूँ इसलिए नहीं, आप खुद आइए, आप खुद अनुभव करिए तो शायद आप समझ पाएँगे। धन्यवाद।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उदयपुर की लाडली जादूगर आंचल के बारे में आपको बता दें कि आंचल ने ४ वर्ष की आयु से अपने पिता श्री से जादू सीख कर दिखाना

प्रारम्भ कर दिया था आज वह भारत ही नहीं विश्व के कई देशों में अपने कौशल का प्रदर्शन कर चुकी हैं।

आंचल ने अब तक १४,००० से अधिक स्टेज शो किए हैं, जो भारत के १७ राज्यों और ७ अन्य देशों में आयोजित हुए हैं। आंचल के शो सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित होते हैं, जैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', दहेज उन्मूलन और युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता। उन्होंने 'इण्डिया स्क्वाड टैलेंट' जैसे मंचों पर भी अपनी खास पहचान बनाई है।

हाल ही में, २३ दिसमबर २०२४ को, आंचल ने उदयपुर के गाँधी ग्राउण्ड में 'एडवेंचर विद फायर' नामक खतरनाक स्टंट का प्रदर्शन किया। इसमें उन्हें १५० फीट लम्बी स्टील की चेन और १२१ तालों से बांधकर सूखी घास से भरे कुएँ में डाला गया था, और मात्र ३ सेकण्ड में वे जलती हुई आग से बाहर निकल आईं। इस अद्‌भुत प्रदर्शन के लिए उनका नाम 'लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में दर्ज किया गया है।

और ऐसी प्रसिद्ध और युवा हस्ती का यह कहना कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर में जो कुछ प्रदर्शित किया गया है उसे देखने के लिए मैं तरस गई थी, बहुत मायने रखता है। प्रायः लोग यह कहते दिखायी देते हैं कि युवाओं को इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र इसे गलत साबित कर रहा है। आंचल तो एक उदाहरण मात्र हैं। यहाँ आने वाले दर्शकों में **70%** युवा, किशोर और बच्चे होते हैं। सब प्रसन्न होकर जाते हैं। बात यह है कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर हम युवाओं के समक्ष किस रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे सीखना जानना है तो **NMCC** वह प्रकल्प है।

विश्वभर में आर्य जगत् में यह प्रथम प्रयोग है जिसके द्वारा महर्षि दयानन्द जी की यह कर्मस्थली अति सुन्दर और आकर्षक रूप में दर्शकों के सम्मुख उपस्थित तो है ही परन्तु अपने आकर्षण के पाश में आबद्ध मंत्रमुग्ध पर्यटकों को वैदिक दर्शन, वैदिक संस्कृति, वैदिक सिद्धान्तों और महर्षि दयानन्द जी के मंतव्यों को सशक्त रूप में सम्प्रेषित करने में सफल हो रही है। इसके पीछे आप लोगों का आशीर्वाद और निरन्तर सहयोग और आत्मीयता काम कर रही है। अतः आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

निवेदक- अशोक आर्य

अध्यक्ष- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

आत्म निवेदन

नारी सशक्तीकरण की वैदिक अवधारणा

नारी सशक्तिकरण एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। परन्तु जब तक हम महिलाओं के सशक्तिकरण का क्या अर्थ है, यह नहीं समझते तब तक सही दिशा का चयन नहीं कर सकते। दिशा परिवर्तन होने से जिसका सशक्तिकरण से कोई लेना देना नहीं है उसे सशक्तिकरण समझ लिया जाता है।

कुछ लोग जो नारीवाद की तख्ती उठाये पाश्चात्य तर्ज पर और मैकाले की शिक्षण पद्धति का शिकार होकर नारी के खुलेपन को ही नारी सशक्तिकरण की परिभाषा के रूप में प्रस्तुत करते हैं, वे दिशा से भटकाने का कार्य करते हैं। यह मानना पड़ेगा कि आज के युग में वे ही प्रभावी हो गए हैं। धारणा यह बना दी गयी है कि प्राचीन भारत में नारी केवल शोषण की शिकार रही है, उसे अधिकार तो अब मिले हैं। प्रस्तुत आलेख का विषय इसीलिए 'नारी सशक्तिकरण की वैदिक अवधारणा' रखा गया है जिससे पाठकों के समक्ष हम यह स्पष्ट कर सकें कि नारी सशक्तिकरण की यह अवधारणा कोई नयी नहीं है। स्वयं वेद में परमपिता परमात्मा के आदेश के अनुसार नारी पुरुष में पूर्णतः समानता है किसी भी स्तर पर किसी भी विषय में नारी के अधिकारों को सीमित नहीं किया है। न ही उसे सशक्त होने से रोकने के यंत्र प्राचीन भारत में उपस्थित हैं। देशकाल स्थिति के अनुसार बीच के समय में विशेषकर मुग़ल काल में नारी को लेकर भारतवर्ष में असमानता के भाव उत्पन्न हुए। इसे असमानता भी क्या कहेंगे जब मुगलों की लोलुप दृष्टि से बचाने हेतु उन्हें घर की चारदीवारी में कैद कर दिया गया और कम आयु में इसी सुरक्षा की भावना के चलते विवाह का प्रचलन हुआ। बाद में यही स्थिति रूढ़बद्ध हो गयी। आज के इस समय में जबकि नारी सशक्तिकरण के गीत गाए जाते हैं अभी भी अनेक क्षेत्रों में असमानता विद्यमान है। उदाहरण के तौर पर कार्य के बदले पारिश्रमिक की बात करते हैं तो असंगठित क्षेत्र में और यहाँ तक की संगठित क्षेत्र में भी महिला की दिहाड़ी पुरुष से कम देखी जाती है।

हमारे मत में वैदिक काल में नारी सशक्तिकरण की जो अवधारणा थी उसके दो बिन्दु मुख्य थे अनिवार्य शिक्षा और पूर्णतः युवावस्था में स्वयंवर विवाह। अनिवार्य शिक्षा जहाँ उसको जीवन के हर क्षेत्र में आधार प्रदान करती है वहीं आत्मनिर्भर भी बनाती है। जब महर्षि दयानन्द जी महाराज यह निर्देश करते हैं कि गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप जब तक वर ना मिले तब तक भले ही कुंवारे रहना पर विवाह न करना, तो ऐसी

स्थिति में अविवाहित महिला को आर्थिक निर्भरता भी अत्यावश्यक है। विवाह के पश्चात् भी इस अर्थार्जन का स्वागत होना चाहिए, पर वहाँ यह स्वैच्छिक है, तो आत्मनिर्भरता में आर्थिक निर्भरता और साथ ही निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी सम्मिलित है। इसके लिए सबसे आवश्यक बिन्दु है कि महिला शिक्षित हो।

महर्षि दयानन्द सामाजिक संरचना के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि- शिक्षा की अनिवार्यता जहाँ लड़के के लिए है वहाँ लड़की के लिए भी निश्चित रूप से है। ८ वर्ष से ऊपर के लड़के और लड़की घर में ना रहने पाए, उनको उनकी पाठशालाओं में भेज दिया जाए और इस बात को सुनिश्चित करने का दायित्व उन्होंने माता-पिता पर, समाज व्यवस्था और राज्य व्यवस्था पर भी डाला। जहाँ ऐसा ना हो वहाँ माता-पिता के सामाजिक बहिष्कार और राज्य दण्ड की भी बात कही है। पाठक समझ सकते हैं कि यह कितनी क्रान्तिकारी व्यवस्था महर्षि दयानन्द १५० वर्ष पहले सत्यार्थ प्रकाश लिखते हुए उस समय दे रहे हैं जब दूर-दूर तक इस तरह की सोच किसी के मन में उपस्थित भी नहीं थी। यही नारी सशक्तिकरण के वैदिक अवधारणा का केन्द्र बिन्दु है।

नारी सशक्तिकरण के दोनों आधार बिन्दु, उनकी अनिवार्य शिक्षा, एवं विवाह की आयु अर्थात् स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मष्तिष्क की स्वामिनी होके विदुषी कन्या स्वेच्छा से अर्थात् स्वयंवर विवाह कर सके इस के सम्बन्ध में वेद में स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा जो निर्देश दिए गए हैं उन सैंकड़ों वेदमंत्रों में से केवल दो वेद मंत्र यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। पहला वेद मंत्र जहाँ विवाह की आयु की बात करता है वहीं दूसरा स्वयंवर की।

हिरण्यकेशो रजसो विसारेऽहिर्धुनिर्वातइव ध्रजीमान्।
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः॥ - ऋग्वेद १/७९/१

अर्थात् जो कन्या लोग चौबीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य्यसेवन और जितेन्द्रिय होकर छः अंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष, उपांग अर्थात् मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त तथा आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक विद्या आदि को पढ़ती हैं, वे सब संसारस्थ मनुष्य जाति की शोभा करनेवाली होती हैं।

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः॥ - यजुर्वेद ३४/१०

हे कुमारियों! तुम ब्रह्मचर्य्य आश्रम के साथ समस्त विद्याओं को प्राप्त हो, युवति होके अपने को अभीष्ट स्वयं परीक्षा किये वरने योग्य पतियों को आप वरो, उन पतियों के साथ आनन्द कर प्रजा, पुत्रादि को उत्पन्न किया करो।

जो लोग वेद को परमपिता परमात्मा का ज्ञान न मानते हों तो मैक्समूलर की इस बात को तो मानते ही होंगे कि The Rigveda is the oldest book in the library of humanity। तो भी उनको यह तो मानना ही होगा कि वैदिक काल में अर्थात् उनकी मान्यता के अनुसार जो सबसे प्राचीन काल है उसमें महिलाओं को लेकर के इतनी उद्दात व्यवस्थाएँ थीं कि वह जहाँ तक चाहे, जिस विषय में चाहे, शिक्षा प्राप्त करें। विवाह में उनका निर्णय ही सर्वमान्य है और वह विवाह के पश्चात् स्वतंत्रता के साथ निर्णय करती हुई अपने परिवार का निर्माण करते हुए समाज के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में अपना जीवन व्यतीत करती रहे और उसकी आसमान छूने की अभिलाषा किसी कारण से बाधित न हो।

यहाँ हम यह बता दें कि अभी कुछ वर्ष पूर्व माननीय उच्चतम न्यायालय का जो एक निर्णय 'लता सिंह बनाम

उत्तर प्रदेश सरकार' में आया था वह इसी वेदादेश की परछाई मात्र कहा जाएगा।

'लता सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य' (२००६) मामले में, सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति अशोक भान और न्यायमूर्ति मार्कंडेय काटजू की खण्डपीठ ने यह महत्वपूर्ण निर्णय दिया था। मामले के अनुसार, लता सिंह, जो एक बालिग महिला थीं, ने अपनी मर्जी से अन्तर्जातीय विवाह किया था। उनके परिवार ने इस विवाह का विरोध किया और उनके पति एवं ससुराल वालों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज कराए। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि एक बालिग महिला को अपनी पसन्द के व्यक्ति से विवाह करने का संवैधानिक अधिकार है, और इसमें हस्तक्षेप करना अवैध है। न्यायालय ने यह भी निर्देश दिया कि ऐसे मामलों में पुलिस को दम्पति की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और झूठे आपराधिक मामलों में उन्हें परेशान नहीं किया जाना चाहिए।

यह निर्णय स्वयंवर की वैदिक अवधारणा को प्रतिविम्बित नहीं करता? 'महिला सशक्तिकरण की वैदिक अवधारणा' में शिक्षित होने के पश्चात् वह स्वतंत्र है कि अपने लिए किस तरह का कार्य क्षेत्र चुने। यद्यपि परिवार का निर्माण प्रथमतः माता का ही कर्तव्य है क्योंकि पिता व अन्य लोगों के समक्ष आने से ९ माह पूर्व ही सन्तान माता के सम्पर्क में होती है और माता के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच सब का सन्तान पर असर पड़ने लग जाता है और पश्चात् भी माता जितना सन्तान के निकट होती है उतना कोई नहीं होता। इसी से जो लोग सन्तान निर्माण को गृहस्थ का सर्वोपरि कर्तव्य मानते हैं वे माताएँ सन्तान निर्माण को अन्य सब कार्यों पर वरीयता देती हैं। माता और सन्तान की निकटता को महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में इसको इस प्रकार व्यक्त किया है।-

'जितना माता से सन्तानों को उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं कर सकता। इसीलिए (मातृमान्) अर्थात् **प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।** धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।' (सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास, महर्षि दयानन्द)

परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वैदिक अवधारणा के अन्तर्गत नारी केवल घर में ही सिमट करके रह जाए। ऐसा दयानन्द का मत कदापि नहीं था। देखें! ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि वह न्यायाधीश बने, वह सेना में भाग ले और उदाहरण भी देते हैं कि देखिए कैकई ने सैन्य शिक्षा के चलते देवासुर संग्राम में महाराजा दशरथ की जान बचाई थी।

'देखो! आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं, क्योंकि जो न जानती होती, तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकती और युद्ध कर सकती?'

(सत्यार्थ प्रकाश- महर्षि दयानन्द)

सेना में आज के समय में अगर हम देखते हैं तो महिलाओं को स्थान मिले कुछ वर्ष ही हुए और अनेकों वर्ष पश्चात् उनको अब जाकर के स्थाई किया जा रहा है।

परन्तु वेद (ऋग्वेद १०/१०२/२) में स्वयं परमपिता परमात्मा ने कहा कि युद्ध की नेत्री (सेना नायिका) विभिन्न विद्युत् से संचालित अस्त्रों की सहायता से, विजय प्राप्त करे।

महर्षि यह भी लिखते हैं कि महिला को न्यायाधीश का भी कार्य करना चाहिए और उसमें एक विशेष बात यह है कि महिलाओं से सम्बन्धित जो अपराध हैं वह महिला न्यायाधीश सुने यह आवश्यक है, इससे जो पीड़िता है उसको अपनी बात कहने में हिचक नहीं होती। पाठक ध्यान करते चलें कि कम से कम डेढ़ सौ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द यह सब बात लिख रहे हैं।

राजकार्य, न्यायाधीशत्वादि; गृहाश्रम का कार्य जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना; घर के सब काम स्त्री के आधीन रहना, इत्यादि काम विना विद्या के अच्छे प्रकार कभी ठीक नहीं हो सकते।

(सत्यार्थ प्रकाश-महर्षि दयानन्द)

इस उद्धरण में सर्वप्रथम राजकार्य लिखा है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महर्षि राजकार्य में महिलाओं की महती भूमिका की वकालत करते हैं। सही है, आप कितनी भी नारी के सशक्तीकरण की बात करलें जब तक विधि निर्माण की और कार्यकारिणी की शक्तियाँ उसे प्राप्त नहीं होतीं नारी सशक्तीकरण का स्वप्न भी अधूरा रहेगा। अभी हाल का नारी वन्दन अधिनियम भी तो इसी दिशा में प्रयास है।

अब हम इस बात को रेखांकित करने का प्रयास करते हैं कि भारत में नारियों की क्या स्थिति थी? भारतीय इतिहास की अगर बात करें तो वैदिक काल में अनेकानेक ऐसी ऋषिकाएँ हुई हैं जिन्होंने वेद के मन्त्रों को व्याख्यायित किया है और उनका नाम उस-उस वेदमंत्र के साथ में स्मरण हेतु, उनको मान्यता देने हेतु, उनकी

प्रशंसा हेतु अंकित किया गया है, यह है वस्तुतः नारी सशक्तिकरण। कोई भेद नहीं। परमात्मा की वाणी का प्रकाशन नर और नारी दोनों कर रहे हैं। इन ऋषिकाओं के इस योगदान के महत्व को आप समझ लें तो फिर इस विषय पर कुछ लिखने पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। क्योंकि सब कुछ अपने आप स्पष्ट हो जाएगा। अपाला, रोमशा, घोषा आदि-आदि ऋषिकाओं के भाष्य में केवल अपाला द्वारा व्याख्यायित दो मंत्र यहाँ दे रहे हैं। आप इस नारी सशक्तीकरण पर गर्व करिए। ऋषिका अपाला आत्रेयी ने (आत्रेयी इसलिए कहा है क्योंकि वे अत्रि ऋषि की पुत्री थीं) ऋग्वेद के आठवें मण्डल के ६१ वे सूक्त के मन्त्रों के अर्थ का प्रकाशन किया है।

उदाहरण के तौर पर हम निम्न मंत्र प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें आप देखेंगे कि शरीर की दुर्बलता को सोम आदि औषधियों के प्रयोग से किस प्रकार से मनुष्य, विशेष रूप से कन्या उपयोग करें इसका वर्णन आता है। तो क्या यह नहीं माना जाएगा के देवी अपाला चिकित्सा विज्ञान की उच्चतम स्तर की ज्ञाता थी?

(१) ऋषिः - अपालात्रेयी। देवता - इन्द्रः। छन्दः - स्वराडार्चीलृपंक्ति। स्वरः - पञ्चमः।।

कन्या३ वारवायती सोममपि स्रुताविदत्।
अस्तं भरन्त्यब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा।। - ऋग्वेद ८/६१/१

'जो कन्या किसी रोग के कारण शरीर से निर्बल तथा निस्तेज हो उसे विवाह से पूर्व सोमलता आदि रोगनाशक औषधियों का रस सेवन कराकर पहले समर्थ और शक्तिशाली बनाना चाहिए; ऐसा हो जाने पर ही वह वस्तुतः पति के स्वीकार-योग्य बनती है।

(२) ऋषिः - अपालात्रेयी। देवता - इन्द्रः। छन्दः - पादनिचृदनुष्टुप। स्वरः - गान्धारः।।

खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो।
अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्व्यकृणोः सूर्यत्वचम्।। - ऋग्वेद ८/६१/७

सोमलता इत्यादि औषधियों के रस का विधिवत् उपयोग करने से शरीर के सम्पूर्ण दोष, प्राणापान आदि क्रियाओं के दोषों से उत्पन्न रोग मिट जाते हैं। पोषण के अभाव में रिक्त एवं खोखला हुआ शरीर पुनः कान्तिमान् हो जाता है। अस्तु। ये और ऐसी अनेकानेक शास्त्रार्थों में परचम फहराने वाली विदुषी महिलाएँ सशक्त नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

अब यदि आज की बात करें तो बड़ी विचित्र स्थिति देखने को मिलती है। आज नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपने कदम दृढ़ता के साथ न केवल जमा चुकी हैं वरन् ऊँचाइयों को स्पर्श कर रही हैं, यह स्वागत योग स्थिति है। परन्तु इसके साथ एक चिन्ताजनक प्रवृत्ति विकसित होती जा रही है। आधुनिक बालाओं की इस मनःस्थिति में पूर्णतः पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव और मैकाले ने जिस शिक्षा योजना का निर्माण किया था उसकी अभूतपूर्व सफलता परिलक्षित होती है। स्वतंत्रता का अभिप्राय यह लिया जा रहा है, सशक्तिकरण का अभिप्राय यह लिया जा रहा है कि हम चाहे जो करें। दुर्भाग्य से अधिकाधिक अंग प्रदर्शन करने में संकोच की बात तो दूर, उसी को सशक्तिकरण की परिभाषा माना जा रहा है। आप देखेंगे सोशलमीडिया पर नारी स्वयं और यहाँ तक किशोरियाँ भी उस सीमा तक अपने को अनावृत्त करने के लिए तैयार ही नहीं उत्सुक हैं कि जिसे शलीलता की परिभाषा में आप कदापि नहीं रख सकते। किसको दोष देंगे? जब वे स्वयं उस हद को स्पर्श करने और स्पर्श ही नहीं उसको पार करने के लिए समुत्सुक हैं। यह भयावह है, और भारतीय संस्कृति और सभ्यता को तार-तार करने वाली स्थिति है। यहाँ हम इस विषय का बहुत ज्यादा न तो वर्णन कर सकते हैं न विषय को स्थापित करने के लिए फोटो इत्यादि दे सकते हैं। पत्रिका की अपनी मर्यादा है। परन्तु हर व्यक्ति जो सोशलमीडिया पर जाएगा हमारी बात और उसमें निहित चिन्ता को समझ सकेगा। इससे आज की नई पीढ़ी क्या पाना चाहती है? सोशल मीडिया पर लाइक्स और बदले में जो उनके इस खुलेपन को बाजार में बेचकर के करोड़ों रुपए कमा रहे हैं उनसे धन प्राप्ति? अर्थार्जन करने के इस तरीके को नारी सशक्तिकरण कभी नहीं कहा जा सकता। यह कार्य तो कोई भी बिना पढ़े-लिखे साधारण महिला भी कर सकती है। अब महिलाओं को इस विषय पर स्वयं विचार करना होगा, क्योंकि कोई भी व्यक्ति लिखेगा तो तुरन्त वह आलोचना का शिकार होगा कि वह नारियों के स्वतंत्रता के अधिकार का समर्थक नहीं है।

इस विषय को पिक्चर्स और वेब सीरीज ने इतना विकृत कर दिया है कि इनको देखकर के बड़े होने वाले किशोर-किशोरियाँ इसे अपनी स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के लिए अनिवार्य मानने लग गए हैं। आज सिगरेट पीना, शराब पीना, रात-रात भर बाहर रहना यह सब नारी सशक्तिकरण का प्रतीक बनता जा रहा है। आप अन्दाजा लगाइए कि किस कदर समाज को गलत दिशा में ले जाया जा रहा है। एक वेब सीरीज आई थी उसमें चार महिलाएँ आपस में मित्र थीं और उनकी जो सशक्तिकरण की परिभाषा थी उसको उसमें दर्शाया गया है, जिसे नजरें झुका करके ही देखा जा सकता है। ये मित्र लडकियाँ अपने को सशक्त अनुभव करने के लिए हर तथाकथित वर्जित कार्य को करना चाहती हैं। यहाँ तक कि प्राइवेट पार्ट्स के नाम जो कि सभ्य समाज में लिए नहीं जाते उनको वह महिलाएँ सड़क पर बैठकर के जोर-जोर से उच्चारित करती हैं और यह मानती हैं कि देखिए हम भी ऐसा कर सकते हैं। क्या यही नारी का सशक्तिकरण है? पाठकगण आप स्वयं विचार कीजिए कि आजकल के बच्चों का यह जो प्रेरणा स्रोत बना हुआ मीडिया है उन्हें किस दिशा में ले जाएगा? हम यह कदापि

नहीं कहना चाहते कि आज सभी नारियाँ ऐसा सोचती हैं। हजारों लाखों महिलाएँ ऐसी हैं जिन्होंने अपने तप, पुरुषार्थ और लगन से स्वयं को ही नहीं, समाज को, राष्ट्र को ऐसे-ऐसे अवदान दिए हैं कि उन्हें वर्षों वर्ष तक स्मरण किया जाएगा और उनको एक रोल मॉडल के रूप में याद किया जाएगा। उनमें से एक दो देवियों के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिख हम भी अपनी कलम धन्य कर लें।

लीबिया लोबो सरदेसाई एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी हैं, जिन्होंने गोवा के स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जन्म २५ मई १९२५ को पर्वरी; बर्देज, गोवा में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गोवा में पूरी करने के बाद, उन्होंने मुम्बई में बी.ए. और एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की। १९५५ में, उन्होंने पुर्तगाली शासन के खिलाफ लोगों को एकजुट करने के लिए 'वोज दा लिबरडाडे' (स्वतंत्रता की आवाज) नामक एक भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की। यह स्टेशन जंगली इलाके में स्थापित किया गया था और इसका उद्देश्य स्वतंत्रता की भावना को फैलाना था। उनके इस योगदान के लिए, २०२५ में, भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

निगार शाजी भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की एक वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने भारत के पहले सौर मिशन, आदित्य-एल१, की परियोजना निदेशक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका जन्म तमिलनाडु के तेनकासी जिले के सेंगोट्टई में एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और बाद में बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रांची से इलेक्ट्रॉनिक्स में मास्टर्स किया। आदित्य-एल१ मिशन के प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में, उन्होंने सूर्य का अध्ययन करने के लिए इस महत्वपूर्ण मिशन का नेतृत्व किया, जिसे २ सितम्बर २०२३ को सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। इनको १९९९ में यंग साइंटिस्ट का पुरस्कार मिल चुका है।

तेजस उड़ाने वाली प्रथम महिला पायलट मोहना सिंह नारी सशक्तिकरण का उत्कृष्ट उदाहरण नहीं है? क्या ये सब प्रेरणा स्रोत नहीं हो सकते?

अन्त में पूजा शर्मा का उल्लेख कर इस आलेख का समापन करेंगे, वरना यह पुस्तक बन जाएगा। पूजा शर्मा ने वह काम किया जो प्रायः लोग नहीं करते और विशेष रूप से महिलाएँ तो बिल्कुल भी इस क्षेत्र में दिखाई नहीं देती। दिल्ली में ७ जुलाई १९९६ को जन्मी पूजा शर्मा को बीबीसी ने २०२४ में सबसे प्रभावशाली १०० महिलाओं में सम्मिलित किया। पूजा ने ४००० से ज्यादा लावारिस शवों का अन्तिम संस्कार सम्पन्न किया है। वह पुलिस के और अस्पतालों के सम्पर्क में रहती हैं। जब भी इन्हें पता चलता है कि किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हुई है जो लावारिस है तो पूजा उनका अन्तिम संस्कार करती हैं।

नारी सशक्तिकरण की बात करें तो उपरोक्त ऐसी महिलाएँ अगर रोल मॉडल के रूप में मान ली जाएँ तो सम्पूर्ण परिदृश्य बदल सकता है। पर आज स्थिति यह है कि सोशलमीडिया पर रानी लक्ष्मीबाई का चित्र यदि डालेंगे और उसी समय किसी एक ऐसी महिला का जिनका हमने ऊपर जिक्र किया जो अपने ही शरीर को उपभोग सामग्री के रूप में प्रस्तुत कर रही है, तो शाम तक दोनों के लाइक्स की संख्या में अन्तर देखकर के आपका सिर झुक जाएगा। आवश्यकता इस बात की है कि इस स्थिति से यथाशीघ्र बाहर निकलना चाहिए इसके लिए महिलाओं को ही आगे आना होगा, और कोई मार्ग नहीं है।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

[कुछ याद उन्हें भी कर लो]

वीर कुंवर सिंह

वीर कुंवर सिंह १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायकों में से एक थे। वे बिहार के आरा क्षेत्र में स्थित जगदीशपुर रियासत के जमींदार थे और ८० वर्ष की आयु में अंग्रेजों के खिलाफ साहसिक युद्ध का नेतृत्व किया। उन्हें उनकी वीरता, रणनीतिक कुशलता और अदम्य साहस के लिए जाना जाता है। कहने को वे जमींदार थे परन्तु इतने लोकप्रिय थे कि आमजन उनके लिए सर्वस्व अर्पित करने को तैयार रहते थे। कुंवर सिंह अपने राज्य जगदीशपुर में प्रजा का विशेष ध्यान रखते थे। वे न्यायप्रिय थे और अपने राज्य के लोगों की समस्याओं को सुनते और हल करते थे। उनकी लड़ाई अंग्रेजों से उनके प्रजा पर अत्याचार के कारण ही थी।

कुंवर सिंह का जन्म २३ अप्रैल १७७७, जगदीशपुर, भोजपुर में (अब बिहार) हुआ। उनके पिता का नाम राजा शाहबाद सिंह और माता का नाम पंचायतन देवी था। वे बचपन से ही घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्ध-कौशल में निपुण थे।

जब १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू हुआ, तो कुंवर सिंह ने अपने सैनिकों के साथ विद्रोह में भाग लिया। उम्रदराज होने के बावजूद, उन्होंने गुरिल्ला युद्ध शैली अपनाई, जिससे अंग्रेजी सेना को भारी नुकसान हुआ। कुंवर सिंह की करिश्माई नेतृत्व क्षमता और जनता से गहरे जुड़ाव ने उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ एक मजबूत सेना खड़ी करने में मदद की। अंग्रेजों के साथ संघर्ष के दौरान उन्होंने बार-बार यह सुनिश्चित किया कि जनता को कम से कम नुकसान हो।

आरा पर वीर कुंवर सिंह का अधिकार १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और साहसिक अध्याय है। इस घटना में उनकी युद्ध-कौशल, रणनीतिक बुद्धिमत्ता और साहस स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

आरा (बिहार) ब्रिटिश प्रशासन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था, जहाँ एक मजबूत किला और अंग्रेजों की सेना तैनात थी। कुंवर सिंह, जो उस समय ८० वर्ष के थे, ने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत का बिगुल फूंका और अपने क्षेत्र के जमींदारों, किसानों और सैनिकों को संगठित किया। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध तकनीकों और अपनी गहरी भूगोलिक जानकारी का इस्तेमाल किया। बाबू अमर सिंह (कुंवर सिंह के भाई) और हरे कृष्ण सिंह जैसे सहयोगियों ने भी उनकी योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

२७ जुलाई १८५७ को कुंवर सिंह ने अपनी सेना के साथ आरा के ब्रिटिश किले को चारों ओर से घेर लिया। किले में लगभग १५० ब्रिटिश सैनिक और

कुछ सिख रेजिमेंट के सैनिक थे, जिनकी कमान विक्टोरिया क्रॉस विजेता कैप्टन डनबर के हाथ में थी। अंग्रेजों को इस हमले की उम्मीद नहीं थी, इसलिए वे घबराहट में आ गए। उसपर बाबू कुंवर सिंह की गुरिल्ला नीति से अंग्रेज बिलकुल अपरिचित थे। कुंवर सिंह के सैनिकों ने जंगलों और नदियों के सहारे से अंग्रेजों पर अचानक हमले किए। रात के समय छापामार हमले और दिन में किले की घेराबंदी जारी रही, जिससे अंग्रेज सैनिकों की रसद और गोला-बारूद की आपूर्ति ठप हो गई। कैप्टन डनबर ने किले से बाहर निकलकर कुंवर सिंह की सेना पर हमला करने की योजना बनाई, लेकिन यह फैसला गलत साबित हुआ। आरा के पास धनपुर गाँव में कुंवर सिंह की सेना ने घात लगाकर हमला किया, जिसमें कैप्टन डनबर मारे गए और अधिकांश ब्रिटिश सैनिक या तो मारे गए या भाग गए। इस विजय के बाद कुंवर सिंह ने आरा किले पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया। उन्होंने ब्रिटिश झण्डे को उतारकर भारतीय ध्वज फहराया और शहर पर अपना अधिकार घोषित किया।

बाबू कुंवर सिंह के अदम्य साहस की चर्चा बिना सोन नदी की घटना के समझ में नहीं आ सकती।

एक बार जब वे अंग्रेजों से लड़ते हुए सोन नदी पार कर रहे थे, तो एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी। कुंवर सिंह ने तुरन्त तलवार से अपना घायल हाथ काटकर नदी में फेंक दिया ताकि जहर पूरे शरीर में न फैले। यह उनकी वीरता और बलिदान का प्रतीक बन गया।

२६ अप्रैल १८५८ को, कई साहसिक लड़ाइयों के बाद, वीर कुंवर सिंह का निधन हो गया। अपनी अंतिम सांस तक वे मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहे। ऐसे महावीर को हमारा नमन।

श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

नवलखा महल – संस्कृति और इतिहास की जानकारी

नवलखा महल; उदयपुर के प्रमुख स्थानों में से एक है। यह स्थान पर्यावरण के अनुकूल है।

सबसे पहले आप प्रेरणा कक्ष में प्रवेश करते हैं, इस कक्ष में भारत के महान् व्यक्तियों की तस्वीरों से भरी एक दीवार है, जिसके बाद भारतीय संस्कृति के १६ संस्कारों का चित्रण है, प्रत्येक संस्कार भारत के विभिन्न राज्यों में दर्शाया गया है। जिससे हमें यह समझने में भी मदद मिलती है कि राज्य और भाषा बदल सकती है लेकिन वैदिक धर्म का आधार सभी के लिए एक ही है।

इस कमरे में रामायण जैसी पौराणिक कहानियों को दर्शाने वाली पेंटिंग भी हैं। ये कक्ष हमें यह भी समझाता है और सिखाता है कि कैसे ये १६ संस्कार हमारे जीवन चक्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फिर इसमें आर्ट गैलरी है, यह गैलरी सभी चार वेदों का वर्णन करती हैं और ऋषियों जैसे कि कणाद्, वेदव्यास आदि द्वारा उनका प्रचार कैसे किया गया और हमारे पूर्वज कितने उन्नत थें क्योंकि कुछ वेदों में वैज्ञानिक तकनीक और कई सूत्र शामिल हैं। जो बात इसे अलग बनाती है वह यह है कि यह आधुनिक पीढ़ी के मिथक को तोड़ता है कि प्राचीन इतिहास पिछड़ा और अतार्किक था।

दीवार पर बने चित्रों में चार युगों और उनकी कहानियों को दर्शाया गया है। यह नैतिक और नैतिक मूल्यों के महत्व को भी दर्शाता है और हमें जीवन जीने की कला भी सिखाता है।

-प्रत्यक्षा कुम्पावत; उदयपुर

आर्यसमाज वैदिक धर्म प्रचारक एवं समाज सुधारक संस्था है

आर्यसमाज ऋषि दयानन्द द्वारा चैत्र शुक्ल पंचमी तदनुसार १० अप्रैल, सन् १८७५ को मुम्बई नगर में स्थापित एक धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रवादी एवं वैदिक राजधर्म की प्रचारक संस्था वा आन्दोलन है। ऋषि दयानन्द को आर्यसमाज की स्थापना इसलिए करनी पड़ी क्योंकि उनके समय में सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर से प्रादुर्भूत सत्य सनातन वैदिक धर्म पराभव की ओर अग्रसर था। यदि ऋषि दयानन्द आर्यसमाज की स्थापना कर वेद प्रचार न करते और सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि एवं आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों की रचना न करते, तो सम्भव था कि वैदिक धर्म विलुप्त होकर इतिहास की एक स्मरणीय वस्तु बन जाता। महाभारत व ऋषि दयानन्द के जीवनकाल के मध्य ऋषि जैमिनी, ऋषि पाणिनी, दर्शन ग्रन्थों के रचयिता एवं स्वामी दयानन्द के विद्यागुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के अतिरिक्त कोई ऋषि वा विद्वान् ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता जिसे चारों वेदों के सभी मन्त्रों का यथार्थ ज्ञान रहा हो। सच्चे योगी व ऋषित्व की परम्परा महाभारत के कुछ समय बाद जैमिनी ऋषि पर समाप्त हो चुकी थी। ऋषि दयानन्द के समय देश का वातावरण अत्यन्त निराशाजनक था। वैदिक धर्म को लोग भूल चुके थे। वैदिक धर्म अन्धविश्वासों, सामाजिक विषमताओं एवं कुरीतियों से युक्त था जिसका आधार अविद्यायुक्त मिथ्या ग्रन्थ यथा १८ पुराण, रामचरितमानस, प्रक्षिप्त मनुस्मृति, प्रक्षिप्त रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थ थे। पुराण एवं रामचरित मानस आदि ग्रन्थ अवतारवाद की वेद विरुद्ध मिथ्या मान्यता के पोषक हैं। लगभग ढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व बौद्ध एवं जैन मतों का प्रादुर्भाव हुआ जो नास्तिक मत थे। इन मतों के अनुयायी ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते। यह अपने आचार्यों महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी जी के मत व मान्यताओं के अनुयायी थे व इन्हीं को ईश्वर के समकक्ष मानकर उनकी मूर्तियों की पूजा करते थे। मूर्तिपूजा का आरम्भ इन्हीं मतों से हुआ है। स्वामी शंकराचार्य जी ने इन मतों का खण्डन कर इनको पराजित किया और एक नये मत अद्वैतवाद व नवीन वेदान्त का प्रचार किया। यह मत वेदानुकूल न होकर ईश्वर के सर्वव्यापक वैदिक स्वरूप में स्थान-स्थान पर अविद्या की कल्पना कर उसे अविद्या से ग्रस्त बताते हैं। वेदों के शीर्ष विद्वान् व ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आचार्य शंकर के मत का युक्ति व प्रमाणों से खण्डन किया है। ऋषि दयानन्द के बाद स्वामी विद्यानन्द सरस्वती तथा पं. राजवीर शास्त्री सहित अनेक विद्वानों ने भी स्वामी शंकर जी के मत की समालोचना करते हुए उनके अद्वैतवाद के सिद्धान्तों को अवैदिक व अयथार्थ सिद्ध किया है।

स्वामी शंकराचार्य के बाद अनेक अवैदिक मत

अस्तित्व में आये। विदेशों में भी ईसाई एवं इस्लाम मतों का आविर्भाव हुआ। यह सभी मत वेद, उनकी शिक्षाओं व मान्यताओं से परिचित नहीं थे। इन सभी मतों में वेद विरुद्ध एवं ज्ञान-विज्ञान व युक्ति विरुद्ध मान्यतायें पाई जाती हैं। ऋषि दयानन्द ने इन सभी मतों का अध्ययन किया और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के आधार पर सभी मतों की तुलना करते हुए उनमें विद्यमान अविद्यायुक्त मान्यताओं का सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में उल्लेख किया है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि ऋषि दयानन्द ने वेदमत को सत्य, ज्ञान एवं विज्ञान से युक्त पाये जाने के कारण ही स्वीकार किया और इससे सभी मनुष्यों को लाभान्वित करने के लिये इसका देश-देशान्तर में अपने मौखिक प्रवचनों व ग्रन्थों के द्वारा प्रचार किया।

वैदिक धर्म में सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त ईश्वर, जीव व प्रकृति के यथार्थस्वरूप का ज्ञान है। चार वेद एवं वैदिक ऋषियों के ग्रन्थों में ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो स्वरूप मिलता है वैसा संसार के किसी मत व पन्थ के ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता। हम ऋषि दयानन्द द्वारा आर्यसमाज के दूसरे नियम में वर्णित ईश्वर के स्वरूप का यथावत् उल्लेख कर रहे हैं। वह लिखते हैं "ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी (सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर) की उपासना (सब मनुष्यों को) करनी योग्य है।" ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी एवं सर्वशक्तिमान है। वह सभी जीवों को उनके कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल अनेक योनियों में जन्म देकर उनका भोग कराता है। ईश्वर ही जीवात्मा को उसके कर्मानुसार जन्म व सुख-दुःख आदि भोगों की व्यवस्था करता है। ईश्वर मनुष्य की आत्मा सहित उसके हृदय एवं अंग-प्रत्यंग में व्यापक है। वह हमारी आत्मा में प्रेरणा भी करता है। मनुष्य जब ईश्वरोपासना, परोपकार अथवा कोई अच्छा काम करता है तो उसकी आत्मा में सुख, आनन्द व उत्साह उत्पन्न होता है और जब कोई बुरा काम करता व करने का विचार करता है तो उसकी आत्मा में भय, शंका व लज्जा आदि उत्पन्न होते हैं। यह आनन्द व सुख तथा भय, शंका व लज्जा आदि ईश्वर द्वारा अनुभव कराये जाते हैं। ईश्वर का स्वरूप जान लेने पर मनुष्य का कर्तव्य होता है कि सर्वोपकारी ईश्वर से हमें जो सुख व सुविधायें प्राप्त हुई हैं, उसका प्रतिदान हम उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना को करके करें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हम कृतघ्न होंगे। ऐसा न करने पर हम ईश्वर के आनन्द व अपनी आत्मा सहित ईश्वर के साक्षात्कार से भी वंचित रहेंगे। ईश्वर के साक्षात्कार से मनुष्य को अनेक लाभ होते हैं। ईश्वर का साक्षात्कार मनुष्य को समाधि अवस्था में ही होता है। समाधि को अष्टांग योग से सिद्ध किया जाता है। योगाभ्यास, समाधि वा धर्माचरण से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष का अर्थ जन्म व मृत्यु के बन्धन से छूटना होता है। मोक्ष प्राप्त कर लेने पर मनुष्य कर्मानुसार मिलने वाले जन्मों से बहुत लम्बी अवधि के लिये मुक्त हो जाता है। मोक्ष की अवधि में जन्म नहीं होता तो मृत्यु भी नहीं होती। ऐसी अवस्था में जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर ईश्वरीय आनन्द से युक्त रहता है जिसे किसी प्रकार का किंचित् भी दुःख नहीं होता। यही मनुष्य वा जीवात्मा का लक्ष्य है। अनुमान कर सकते हैं कि हमारे ऋषियों व मुनियों को मोक्ष प्राप्त हुआ करता था। ऋषि दयानन्द समाधिसिद्ध योगी थे। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार के लिये जो पुरुषार्थ किया, उससे अनुमान होता है कि उन्हें भी मोक्ष की प्राप्ति हुई होगी। मोक्ष के स्वरूप व उसकी प्राप्ति की विधि को जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश का नवम समुल्लास पठनीय है। पूरा सत्यार्थप्रकाश

पढ़कर मनुष्य मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ सकता है। आर्यसमाज वेद विहित पंचमहायज्ञों की प्रचारक

संस्था है। यह पंचमहायज्ञ हैं सन्ध्या वा ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेव-यज्ञ। यह पाँचों यज्ञ दैनन्दिन करने होते हैं। इसे करने से अनेक लाभ होते हैं। आर्यसमाज मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त असत्य मान्यताओं का खण्डन भी करता है। इसका कारण लोगों को असत्य व अज्ञानपूर्ण कार्यों को करने से रोकना एवं सत्यकर्मों सहित ईश्वर की उपासना में प्रवृत्त कर उन्हें पापों व उनके दुःखरूपी फलों व भोगों से बचाना है।

आर्यसमाज समाज-सुधारक संस्था व आन्दोलन भी है। समाज में अनेक कुरीतियाँ एवं मिथ्या परम्पराएँ हैं जिन्हें दूर करना आवश्यक है। जड़-मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित-ज्योतिष, मृतक-श्राद्ध, बाल-विवाह, बेमेल-विवाह, जन्मना-जातिवाद, ऊँच-नीच आदि भेदभाव को आर्यसमाज निषिद्ध बताता है। इसके स्थान पर वैदिक विधानों की महत्ता बताकर आर्यसमाज उन्हें आचरण में लाने का प्रचार करता है। मनुष्य का आचरण वेदानुकूल ही होना चाहिये तभी वह मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आर्यसमाज गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था की पोषक है। आर्यसमाज की दृष्टि में न केवल मनुष्य अपितु सभी जीव योनियाँ परमात्मा की सन्तानें हैं। सभी योनियों के प्राणी हमारे भाई व बन्धु हैं तथा ईश्वर हम सब का माता व पिता है। उन सबके प्रति हमारे भीतर सद्भाव व उपकार की भावना होनी चाहिये। मांसाहार को आर्यसमाज मनुष्यों के लिये निषिद्ध सिद्ध करता है। मांसाहार बहुत बड़ा पाप है जिसका फल ईश्वर से महादुःख के रूप में प्राप्त होता है। मदिरापान भी मनुष्य व उसकी आत्मा की उन्नति में बाधक एवं हानिकारक है। आर्यसमाज ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का भी पक्षधर है। वह भ्रष्टाचार व लोभ से युक्त परिग्रह की प्रवृत्ति को मनुष्य के पतन का कारण मानता है। आर्यसमाज वेद एवं ऋषियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय को सर्वाधिक महत्व देता है जिससे मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होने के साथ अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि होती है। ऐसा मनुष्य विद्वान्, निरोगी, सुखी एवं दीर्घायु होता है।

आर्यसमाज वैदिक राजधर्म का प्रचार भी करता है। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास का शीर्षक 'राजधर्म की व्याख्या' है। इस राजधर्म को ऋषि दयानन्द ने वेदों पर आधारित प्राचीन वेदानुकूल एवं उपादेय ग्रन्थ मनुस्मृति, शतपथ ब्राह्मण, शुक्रनीति, रामायण एवं महाभारत के आधार पर प्रस्तुत किया है। आर्यसमाज ने शिक्षा विषयक उत्तम विचार भी दिये हैं जिसका उल्लेख सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में मिलता है। आर्यसमाज गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का पोषक है। इस प्रणाली में संस्कृत सहित कुछ अन्य भाषाओं एवं ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित विषयों सहित आधुनिक चिकित्सा एवं अभियांत्रिक विद्या, कम्प्यूटर आदि की समयानुकूल शिक्षा भी दी जा सकती है वा दी ही जानी चाहिये। वर्तमान समय में हमारे अनेक गुरुकुलों में आधुनिक शिक्षा दी जा रही है। विद्यार्थी

जीवन में मनुष्य को धर्मशास्त्र भी अवश्य पढ़ने चाहिये तभी मनुष्य नैतिक गुणों को धारण कर व उनका आचरण कर सभ्य व श्रेष्ठ मनुष्य बन सकते हैं। वैदिक धर्मशास्त्रों की शिक्षा का अभाव मनुष्य को चारित्रिक पतन सहित वेद निन्दक नास्तिक बनाता है। आधुनिक शिक्षा को पढ़कर मनुष्य ईश्वर व आत्मा के सत्यस्वरूप एवं अपने-अपने धार्मिक कर्तव्यों के प्रति विज्ञ व आचरणशील नहीं होते।

आर्यसमाज एक राष्ट्रवादी संस्था भी है। वेद में पृथिवी को माता कहकर उसका स्तवन किया गया है। हमें अपने देश के लिये अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना से ओतप्रोत रहना चाहिये। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भी वैदिक संस्कृति की देन है। 'सत्यमेव जयते' वैदिक संस्कृति का ही एक ध्येय वाक्य है। वैदिक धर्म सरलता का प्रतीक है। इसमें भड़कीले पहनावों वा वेशभूषा सहित अप्राकृतिक सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग की अनुमति नहीं है। यह बातें मनुष्य के व्यक्तित्व व जीवन की उन्नति में साधक न होकर बाधक होती हैं। संक्षेप में यही कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार, नास्तिकता को दूर कर आस्तिक जीवन का निर्माण करने, अविद्या को दूर कर विद्या की वृद्धि करने, असत्य, अन्याय व शोषण को दूर करने तथा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करते हुए वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिये की थी जिसमें समाज-सुधार भी मुख्य अंग व उद्देश्य था।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

कर्ज तो किसी न किसी रूप में चुकाना ही पड़ता है

दो सहकर्मी लंच कर रहे थे। लंच के उपरान्त एक सहकर्मी ने अपने बैग में रखे डिब्बे में से कुछ स्वादिष्ट मिठाइयाँ निकालीं और दूसरे सहकर्मी को दीं। वो प्रायः कुछ न कुछ मिठाई अवश्य लेकर आते हैं। दूसरे सहकर्मी ने मिठाइयाँ लेते हुए कहा कि भई रोज-रोज मिठाइयाँ खिलाकर मुझ पर इतना कर्ज न चढ़ाओ। ''क्या मतलब?'' पहले सहकर्मी ने पूछा। दूसरे सहकर्मी ने कहा, ''मतलब ये कि इस जन्म का जो कर्ज होगा वो किसी न किसी रूप में अगले जन्म में उतारना पड़ेगा और मैं नहीं चाहता कि अगले जन्म में मैं कर्ज उतारने के चक्कर में ही लगा रहूँ।'' ''तो इस जन्म में ही उतार देना,'' पहले सहकर्मी ने मजाक में कहा। जब हम किसी से कोई चीज अथवा पैसा उधार लेते हैं तो वो हमें लौटाना पड़ता है। लौटाना भी चाहिए और समय पर ही लौटाना चाहिए अन्यथा उसके दुष्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कुछ लोग किसी विवशता के कारण उधार ली हुई चीज अथवा पैसा लौटाने में असमर्थ हो जाते हैं अथवा बेईमानी के कारण लौटाना नहीं चाहते तो लोग कहते हैं कि कर्ज तो लौटाना ही पड़ेगा। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में जरूर लौटाना पड़ेगा। अगला जन्म किसने देखा है? वास्तव में इस जन्म के कर्ज की अदायगी इस जन्म में ही करनी पड़ती है। कर्मों का फल किसी न किसी रूप में इसी जन्म में भोगना पड़ता है। और इस जन्म में न चुकाएँ तो? यह सम्भव ही नहीं है कि इस जन्म का कर्ज इस जन्म में न चुका पाएँ। कर्ज तो इस जन्म में ही चुकाना पड़ेगा वो अलग बात है कि हमें पता भी न चले और कर्ज का भुगतान भी हो जाए। अब यह कर्ज कर्ज देने वाले को चाहे उस रूप में न मिले लेकिन कर्ज लेने वाले को तो किसी न किसी रूप में चुकाना ही पड़ता है और प्रकारान्तर से हुआ भुगतान बहुत महँगा पड़ता है।

हमारे मित्र, रिश्तेदार अथवा अन्य परिचित अपरिचित व्यक्ति हमें कभी न कभी दावत या कोई भेंट देते रहते हैं या अन्य किसी रूप में सहायता करते रहते हैं इसमें सन्देह नहीं। इस संसार में आदान-प्रदान के माध्यम से ही संतुलन बना हुआ है अतः हम भी कोशिश करते हैं कि हम भी किसी न किसी रूप में उनका कर्ज उतारें या उनकी मदद करें। उन्हें दावत या भेंट दें। कई बार जब हम इसमें असमर्थ पाते हैं तो हमें कमतरी का अहसास होता है और इसके परिणामस्वरूप हमारी मानसिकता में

परिवर्तन आने लगता है। कई बार हममें हीनता की भावना घर करने लगती है। ऐसे मनोभावों का सीधा असर हमारे भौतिक शरीर व क्रियाकलापों पर भी पड़ता है। कमतरी अथवा विवशता का एहसास, शारीरिक कष्ट व मानसिक व्यग्रता के रूप में वास्तव में हम अपना कर्ज ही चुका रहे होते हैं। कर्ज मात्र रुपए-पैसों या वस्तुओं में ही नहीं चुकाया जाता अपितु मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा झेलकर भी हम परोक्ष रूप से अपना कर्ज ही चुका रहे होते हैं।

कई बार हम रुपए-पैसों के रूप में नकद कर्ज भी लेते हैं और उसे ब्याज समेत चुकाते हैं। कई बार कर्ज के रुपए समय पर न चुका पाने के कारण बड़ी शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। वाद-विवाद की दशा में कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ते हैं और पैसों के साथ-साथ जुर्माना, सजा या दोनों भुगतने पड़ते हैं। और कई बार तो कुछ लोग जीवनभर कर्ज नहीं चुका पाते। ऐसे में कर्ज लेने से अन्तिम प्रस्थान तक कर्ज लेने वाले पर जो मानसिक दबाव बना रहता है वही वास्तव में कर्ज की अदायगी होता है। जो लोग ये समझते हैं कि किसी प्रकार का कर्ज न चुकाने पर भी उन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता तो वे गलतफहमी के शिकार हैं। यदि वे समय पर कर्ज चुकाते तो उनकी स्थिति कर्ज न चुकाने की स्थिति से बहुत अच्छी होती जिसे वे कभी नहीं जान पाएँगे।

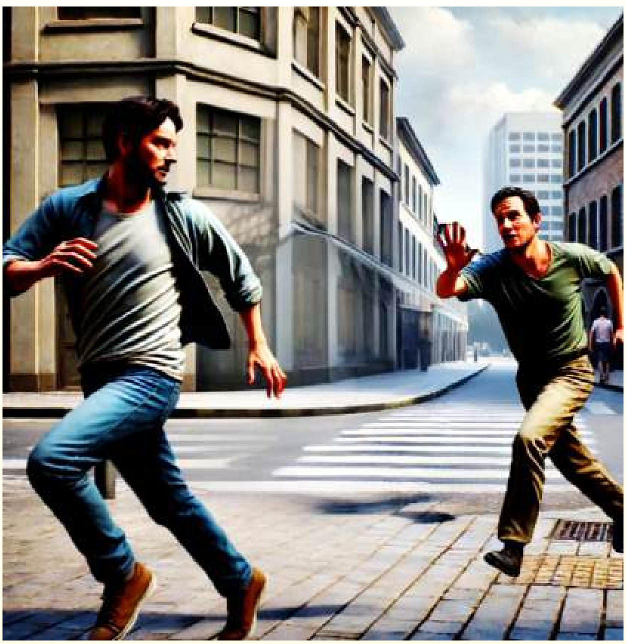

वास्तव में समय पर कर्ज न चुकाकर हम घाटे में ही रहते हैं। किसी भी प्रकार का कर्ज चुकाने के बाद व्यक्ति को बहुत संतुष्टि मिलती है। वो हर प्रकार के तनाव से मुक्त रहता है। समाज में और भी कई प्रकार के कर्ज या ऋण होते हैं जैसे मातृ ऋण, पितृ ऋण, गुरु ऋण, मातृभूमि ऋण इत्यादि। देश व काल के अनुसार और भी कई प्रकार के ऋण हो सकते हैं। इन ऋणों को भी किसी न किसी रूप में चुकाना पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके लिए समाज के नियमों का पालन करना भी अनिवार्य है। यदि उनकी उपेक्षा होगी तो उपेक्षा करनेवाले को उसका खामियाजा भी भुगतना पड़ेगा। यदि हम उपरोक्त ऋणों को सामाजिक व्यवस्था के अनुसार नहीं चुकाएँगे तो अन्य किसी रूप में चुकाने को बाध्य होंगे। इस कर्ज अदायगी का सबसे दुःखद पहलू यही है कि हम कर्ज चुका रहे होते हैं और कर्ज चुकता भी नहीं हो पाता।

कई व्यक्ति अपने सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों का निर्वाह भी ठीक से नहीं करते। इसका भुगतान भी अवश्य करना पड़ता है। लोग प्रायः शिकायत करते हैं कि बुढ़ापे में उनके बच्चे न उनका सम्मान ही करते हैं और न ठीक से देखभाल ही करते हैं। ये स्थिति भी कहीं न कहीं कर्ज उतारने से ही जुड़ी होती है। जो लोग अपने माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक से नहीं करते अथवा उनकी उपेक्षा करते हैं उनके बच्चे भी उनके प्रति अपने दायित्वों का निवाह ठीक से नहीं करेंगे तो इसमें आश्चर्य की बात क्या है? ये वास्तव में परोक्ष रूप से कर्ज की अदायगी ही है। आपने माता-पिता का कर्ज नहीं उतारा तो आपके बच्चों की आपके प्रति उपेक्षा उस कर्ज की अदायगी ही है। हर सम्बन्ध में यही नियम लागू होता है अतः पीड़ा

अथवा परोक्ष रूप से कर्ज अदायगी से बचने के लिए हमें ईमानदारी से सम्बन्धों का उचित निर्वहन करना चाहिए।

ये भी देखने में आता है कि लिया गया ऋण न चुकाने पर कुछ लोगों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। वे बड़े बेशर्म होते हैं और कुछ भी उदरस्थ करने के बाद डकार तक नहीं लेते। ऊपर से तो लगता है कि ऐसे लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन उन पर जो प्रभाव पड़ता है वह कम घातक नहीं होता। ऐसे व्यक्ति हमेशा भयभीत अथवा सशंक रहते हैं कि देनदारी को लेकर कहीं कोई उनका अपमान न कर दे। वे लोगों से बचते फिरते हैं। बार-बार झूठ बोलते हैं जिससे उनका चारित्रिक पतन होता है। उनका आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है। उनका न केवल सामाजिक दायरा संकुचित हो जाता है अपितु उनसे भी निकृष्ट लोग उनके अपने और समर्थक बन जाते हैं। ये भी एक प्रकार से कर्ज की अदायगी ही है। यदि हम सामान्य तरीके से कर्ज की अदायगी नहीं करेंगे तो वह असामान्य तरीके से होगी और अवश्य होगी लेकिन इसका प्रभाव बहुत बुरा होगा।

यदि कोई व्यक्ति कर्तव्यच्युत, निर्लज्ज अथवा अव्यावहारिक हो गया है तो ये बहुत ही घृणित बात है। ये भी कर्ज अदायगी ही है लेकिन ये किसी सजा से कम नहीं। जरूरी है कि हम अपने आर्थिक ही नहीं सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति भी सचेत रहें, उन्हें पूरा करें अन्यथा अन्य किसी रूप में उनकी बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी इसमें सन्देह नहीं। जिस प्रकार से प्रशासनिक नियमों का उल्लंघन करने अथवा कानून तोड़ने पर जुर्माना या सजा निश्चित है उसी प्रकार से सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने पर भी अपराधबोध एवं अपराधबोध से उत्पन्न मानसिकता व उससे उत्पन्न शारीरिक दोषों अथवा व्याधियों से मुक्ति असम्भव है। इससे बचने के लिए हमें चाहिए कि हम समय पर अपने उत्तरदायित्वों का ठीक से निर्वहन करके सामान्य तरीके से कर्ज अदा करते रहें।

एडी. १०६ सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - ११००३४, चलभाष- ०९५५५६२२३२३
Email : srgupta54@yahoo.co.in

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
BHIM UPI

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 336/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

G Pay
BHIM UPI

शोक-संवेदना

न्यास के कर्मठ जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़ की ६२ वर्षीय बुआ जी का दिनांक २१ मार्च २०२५ को निधन हो गया। वे कुछ समय से बीमार थीं। आर्य समाज के प्रति उनके मन में अपार स्नेह और प्यार था। आर्य समाज सज्जन नगर, उदयपुर की स्थापना के समय दो दशक पूर्व उन्होंने रुपये १०००० की राशि प्रदान की थी। परिवार में संस्कार देने में बुआजी सदैव अग्रणी रहीं। उनका निधन राठौड़ परिवार के लिए निश्चित ही पीड़ादायक है। हम न्यास के सभी सदस्य परमात्मा की अटल व्यवस्था को नमन करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और राठौड़ परिवार को वह शक्ति भक्ति प्रदान करें जिससे वह वियोगजन्य पीड़ा को सह सकें। - सम्पादक

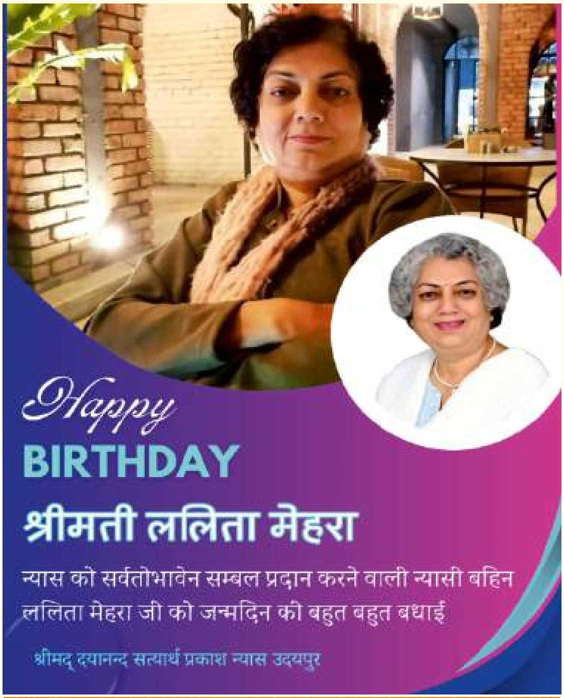

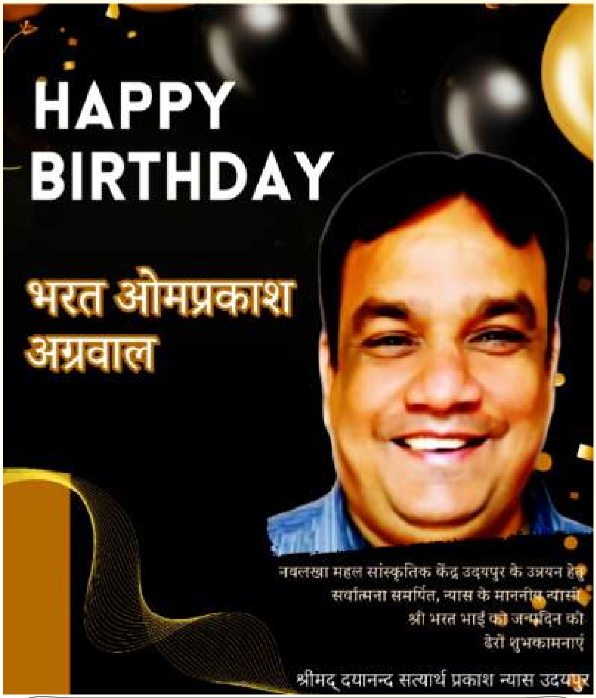

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक

३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य   राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य   राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य   राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– 07.04.2025

प्रकाशक के हस्ताक्षर

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

हृदय रोगों में अत्यन्त लाभप्रद वनौषधि 'अर्जुन'

अर्जुन हृदय के लिए लाभकारी औषधियों में एक प्रसिद्ध वनस्पति है। यह देश के प्रायः सभी प्रान्तों विशेषतः बंगाल, मध्यप्रदेश, दक्षिण बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि में पाया जाता है। इसके १५ से २० मीटर ऊँचे वृक्ष होते हैं। इसकी छाल, बाहर से श्वेत वर्ण की चिकनी तथा भीतर से कोमल, स्थूल एवं रक्तवर्ण की होती है। जैसे सांप अपने शरीर से केंचुली उतारता है वैसे वर्ष में एक बार इस वृक्ष से भी काण्डत्वक् (छाल) उतर कर नीचे गिर जाती है। चिकित्सा में काण्डत्वक् को ही प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से इसका प्रयोग हृदय रोग, रक्तपित्त, रक्त विकार, कास, पूयमेह, प्रदर, जीर्ण ज्वर व सामान्य दुर्बलता में किया जाता है। आयुर्वेद चिकित्सक इसका प्रयोग रोगी की प्रकृति व अवस्थानुसार चूर्ण, क्वाथ, पाक, घृत और अर्जुन साधित दुग्ध के रूप में कराते हैं।

अर्जुन के प्रयोग से हृदय को आवश्यकतानुसार पर्याप्त रक्त की आपूर्ति होने से हृदय में संकोच, विकास और आराम ये तीन क्रियाएँ विशेष रूप से हुआ करती हैं उनमें हृदय के आराम की वृद्धि होती है। इसके कारण हृदय में उत्साह एवं बल की प्राप्ति होती है। इसके प्रयोग से रक्तवाह स्रोतों की संकुचन ठीक प्रकार से होने से रक्त को ठीक प्रकार पूरे शरीर में फेंकने व पूरे शरीर में फैले रक्त को खींचने का कार्य हृदय भली प्रकार कर पाता है। अतः हृदय व रक्तवाहिनियों की कमजोरी, पूरे शरीर में सूजन, नाड़ी के मन्द हो जाने, अल्प रक्तचाप, श्वास, खांसी आदि पुराने स्थायी विकारों में इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

ऐलोपैथिक चिकित्सा से हृदय का मात्र विरामकाल बढ़ता है उससे न तो हृदय की ताकत बढ़ती है और न उत्साह की वृद्धि होती है और उनका विषैला अंश शरीर में धीरे-धीरे जमा होकर भविष्य में कमजोरी बढ़ाता है। अर्जुन त्वक् के सेवन से न केवल हृदय का आरामकाल बढ़ता है साथ ही उसकी शक्ति भी बढ़ती है साथ ही यह शरीर में जमा न होकर मूत्र की मात्रा बढ़कर मूत्र द्वारा बाहर निकल हाता है।

अर्जुन के सेवन से पित्त की विदग्धता एवं आर्द्रता कम होकर रक्त में स्वरदुता पैदा हो जाती है। इससे रक्त पित्त व अम्ल पित्त जैसे पैत्तिक रोगों में भी लाभ होता है। रक्तशोधक होने से शरीर में कान्ति पैदा होती है व ताकत भी बढ़ती है।

मोटापे में मेदोवृद्धि होकर हृदय दुर्बल हो जाता है। जब ऐसी स्थिति में अर्जुनत्वक् के निरन्तर प्रयोग से हृदय व रक्तवाह स्रोतों को बल प्राप्त होकर मेदोवृद्धि का नाश हो जाता है।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों के अनुसन्धानों से प्राप्त परिणामों से पाया गया है कि अर्जुन वृक्ष की छाल की क्रिया संकोचक, हृदयोत्तेजक, पौष्टिक एवं शरीर में संचित विषैले द्रव्यों को शरीर से बाहर निकाल देने वाली होती है। अर्जुन छाल से तैयार औषधि को मेंढ़क, खरगोश एवं मनुष्यों पर प्रयोग किया गया। इसके परिणामों से पता लगा कि हृदय रोगों पर जिसमें पौष्टिक तथा उत्तेजक पदार्थ देने की आवश्यकता हो, यह अत्यन्त उपयोगी औषधि है।

मात्रा- अर्जुन छाल चूर्ण ३ से ६ ग्राम, क्षीर पाक में ५ से १० ग्राम, स्वरस १० से २० मि.ली., क्वाथ ५० से १०० मि.ली।

अर्जुन के कुछ विशिष्ट प्रयोग

अर्जुन पाक- २०० ग्राम अर्जुन छाल का चूर्ण लेकर उसे १५ लीटर गोदुग्ध में डालकर धीमी अग्नि पर पकायें। जब खोया (मावा) जैसा गढ़ा हो जाये तो इसमें ७५० ग्राम गुड़ मिलाकर पुनः पकायें। चाशनी जैसा

होने पर नीचे उतार कर निम्न औषधियों का महीन चूर्ण मिलायें।

तेजपत्र, धनिया, दालचीनी, नागकेशर, वंशलोचन, इलायची, लौंग, जायफल, सौंठ, काली मिर्च, पीपर, नागरमोथा, असगन्ध और लौह भस्म प्रत्येक १५-१५ ग्राम।

इन सबको अच्छी तरह मिलाने के बाद १५-१५ ग्राम के लड्डू या बर्फी काटकर रख लेवें।

इस पाक की १५-१५ ग्राम की मात्रा नित्य सेवन करने से हृदय रोग मिट जाता है। मस्तिष्क रोग, क्षय, रक्ताल्पता, सूजन, प्रमेह व वातरोगों में भी इसका सेवन लाभप्रद होता है।

अर्जुन घृत- अर्जुन से तैयार अर्जुन घृत सब प्रकार के हृदय रोगों में अच्छा लाभप्रद होता है। अर्जुन घृत घर पर ही बना सकते हैं। इसके बनाने का तरीका इस प्रकार है-

अर्जुन की छाल का ५ तोला रस लें। यदि अर्जुन की छाल सूखी हुई मिले तो १२५ ग्राम सूखी छाल लेकर इसे मोटा-मोटा कूटकर १६ लीटर पानी में डालकर उबालें, उबलते-उबलते जब दो लीटर पानी शेष रह जाए तब इस क्वाथ को दूसरे बर्तन में छान लें। अब ५ तोला (६० ग्राम) गाय का शुद्ध घी अग्नि पर रखी कढ़ाई में छोड़ दें, इसके बाद अर्जुन की छाल का पहले से तैयार ६० ग्राम कल्क और पहले से तैयार क्वाथ की पूरी मात्रा (यदि ताजा छाल मिले तो उसका ६० ग्राम रस) डालें और धीमी अग्नि पर पकने दें। जब पकते-पकते केवल घी शेष रह जाये तो कढ़ाई को नीचे उतार कर ठण्डा होने दें। अब इसमें ६० ग्राम शहद और ६० ग्राम मिश्री पीसकर मिला दें। इस प्रकार तैयार घृत को साफ सूखे काँच या मिट्टी के पात्र में ढ़ककर रख दें।

इस तैयार घृत की ६-६ ग्राम की मात्रा गाय के गर्म दूध में प्रातः सायं सेवन करें। इससे हृदय के रोगों का नाश होता है एवं हृदय बलिष्ठ बन जाता है।

अर्जुन संचित दूध- अर्जुन छाल के बारीक चूर्ण को २५० मि.ली. गोदुग्ध में डालें, इसमें १२५ मि.ली. पानी भी मिला लेवें। अब इसको धीमी अग्नि पर उबालें, दुग्ध मात्र शेष रहने पर अग्नि से उतार कर स्वादानुसार मिश्री मिलाकर हल्का गर्म रहने पर धीरे-धीरे पी लेवें। यदि नित्य अर्जुन साधित यह दूध पीते रहें तो हृदय रोग से मुक्ति मिल जाती है। यह प्रयोग पुराने ज्वर, रक्त-पित्त, खूनी दस्त में भी अच्छा लाभ करता है।

अर्जुनारिष्ट- यह औषध प्रायः सभी प्रसिद्ध आयुर्वेदिक कम्पनियों द्वारा बनी हुई बाजार में उपलब्ध है। किसी अच्छी कम्पनी का लेकर भोजनोपरान्त २०-२० मि.ली. की मात्रा में बराबर जल मिलाकर सेवन कर सकते हैं।

नोट- हृदय में कई प्रकार की विकृतियाँ होती हैं। यद्यपि अर्जुन का कार्य हृदय एवं रक्त वाहिनियों को सबल बनाते हुए हृदय रोग में स्थायी लाभ प्रदान करना है तथापि हृदय रोगी अपनी वर्तमान चिकित्सा को अपने डॉक्टर की सलाह के बगैर बन्द नहीं करें।

डॉ.वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
13, श्री रामनगर, सेक्टर-6, उदयपुर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

महर्षि दयानन्द का कोलकाता प्रवास अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। मुंगेर से स्वामी जी महाराज भागलपुर पहुँचे। यहाँ हम एक बात का उल्लेख करना चाहते हैं कि आखिर ईसाइयों को धर्मांतरण कराने में इतनी सफलता क्यों मिली? इस विषय में स्वामी जी का क्या मत था? ब्रिटिश राज्य का उनको पूर्ण समर्थन था, यह तो ठीक है परन्तु हमारे लोगों ने अपनों के साथ जो व्यवहार किया या हिन्दुओं की धर्म पुस्तकों में जो-जो बातें लिखी थीं वे तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती थीं और पादरी लोग इसकी आलोचना करके हिन्दुओं को यह स्पष्ट करते थे कि तुम्हारे धर्म में ऐसी ऐसी बातें कही हुई हैं। इस कारण से भी लोग ईसाई बनते थे। यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट करेंगे। भागलपुर प्रवास में एक बार बहुत से ईसाई पादरी स्वामी जी से मिलने आए। स्वामी जी के उपदेश के पश्चात् एक बंगाली ईसाई जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था, रोने लगा और उसने कहा कि यदि आप जैसे उपदेशक मुझे पहले मिल जाते तो मैं कदापि ईसाई नहीं होता। वह कहता है कि मैं स्कूल में हिन्दू धर्म पर पादरियों के कटाक्ष सुनकर जब घर आता था और पंडितों से उनके कटाक्ष का उत्तर पूछता था, तो कोई भी उसका उत्तर न दे सकता था। मुझे उस समय उत्तर मिल जाते तो मैं ईसाई नहीं बनता। इस एक घटना का उल्लेख इसलिए किया कि अनेक स्थानों पर ईसाई मत में धर्मांतरण का प्रमुख कारण यह बना। हिन्दू धर्म की पुस्तकों में, पुराणों में जो बातें लिखी हैं उनका हिन्दू ही बचाव नहीं कर पाते थे।

पाठकगण! क्या आप सोच सकते हैं कि एक समय ऐसा भी था जब हिन्दू अपनी लड़कियों का दान पण्डों को कर दिया करते थे। महाराज ने जब यह दृश्य भागलपुर प्रवास में अपनी आँखों से देखा तो उन्हें इतनी तीव्र वेदना हुई कि सायंकाल उन्होंने भोजन भी नहीं किया और इस चिन्ता में डूबे रहे कि कैसे भारत देश को इन मूर्खताओं और पाप कर्मों से बचाया जाए।

भागलपुर से स्वामी जी कोलकाता पहुँचे और वहाँ प्रमोद कानन में निवास किया। लगभग साढ़े तीन मास के इस प्रवास में महर्षि दयानन्द के अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार और कार्य सामने आते हैं। बंगाल उन दिनों शिक्षित लोगों का गढ़ था और उसमें भी ब्राह्मसमाज के प्रभावशाली लोग वहाँ कार्य कर रहे थे। वे भी स्वामी जी के सम्पर्क में आए। आदि ब्राह्म समाज के उपदेशक हेमचन्द्र चक्रवर्ती से स्वामी जी का वार्तालाप हुआ, उसमें निम्न सिद्धान्त निकाल कर के आए, जो ब्राह्म समाजियों को उपदेश रूप थे।

(१) मनुष्य जाति एक ही है और जाति के भेद मनुष्य जाति, पशु जाति, पक्षी जाति इस प्रकार से समझे जा सकते हैं। वर्ण और जाति एक नहीं हैं, वर्णभेद योग्यता, कार्य और रुचि से निर्धारित होते हैं। जो वेदज्ञ हैं और पण्डित हैं वे ब्राह्मण हैं, जो युद्ध करते हैं व ज्ञानवान् हैं वे क्षत्रिय हैं, जो व्यापार करते हैं वे वैश्य और जो मूर्ख हैं वे शूद्र हैं, और जो महामूर्ख हैं वे अतिशूद्र हैं।

(२) ईश्वर एक है और वह निराकार है। बहुत दिन तक योग करने से ईश्वर की उपलब्धि होती है। योग की व्याख्या करते हुए हेमचन्द्र को स्वामी जी ने अष्टांग योग की व्याख्या सुनाई और गायत्री का अर्थ सहित ध्यान करने का उपदेश दिया।

(३) छः दर्शन एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। सृष्टि की उत्पत्ति जिन-जिन छः कारणों से हुई है उनमें से

एक-एक की व्याख्या एक-एक दर्शन में मिलती है।

उन दिनों ब्राह्म समाज के लोगों ने यज्ञोपवीत के विरुद्ध अभियान चला रखा था। स्वामी जी ने उपदेश दिया कि यज्ञोपवीत अवश्य पहनना चाहिए। कोलकाता में केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्र नाथ ठाकुर, द्विजेन्द्र नाथ पंडित, ताराचरण तर्कवाचस्पति, पंडित महेशचन्द्र न्यायरत्न आदि गणमान्य लोग स्वामी जी से वार्तालाप करने आया करते थे।

स्वामी जी संस्कृत में संभाषण किया करते थे, उपदेश भी। उनकी संस्कृत के बारे में कोलकाता में मत यह बना कि संस्कृत भाषा में ऐसी सरल और माधुर्यपूर्ण वक्तृता केवल स्वामी दयानन्द से ही सुनी गई और वह संस्कृत ऐसी होती थी कि संस्कृत ज्ञान से सर्वथा शून्य व्यक्ति भी उनके व्याख्यान को समझने लग जाता था।

स्वामी जी का प्रबल आग्रह रहता था कि वेद की शिक्षा पाठशालाओं में और कॉलेजों में अवश्य दी जानी चाहिए। आर्य समाज के संस्थानों में भी वेद आज भी नहीं पढ़ाए जाते, पर हमें ध्यान रखना चाहिए कि स्वामी जी ऐसे शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता नहीं समझते थे जहाँ वेद ना पढ़ाए जाएँ। एक बार बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर ने कोलकाता का जो संस्कृत कॉलेज था उसे तोड़ देने का प्रस्ताव किया था, इस बात को सुनकर स्वामी जी ने कहा कि ऐसे कॉलेज से जिसमें वेद नहीं पढ़ाए जाते कोई लाभ नहीं। जब बाबू प्रसन्न कुमार ठाकुर ने मूलजोड़ में एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की तो स्वामी जी ने कहा यहाँ पर वेदों की शिक्षा अवश्य दी जाए। तो आर्यसमाज के शिक्षा संस्थान चलाने वाले लोगों को महर्षि के इस आग्रह पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

वेदों का पढ़ाई में कोई स्थान न होने के कारण महर्षि दयानन्द चिन्तित थे। एक बार उन्होंने बलदेव को कहा रईसों के पुत्र तो फारसी और अंग्रेजी ने ले लिए, दरिद्रों के लड़के संस्कृत के लिए रह गए हैं। इन वानरों से कुछ न होगा, तब उन्होंने संकल्प किया कि व्याख्यानों के साथ वे वेदभाष्य करने का काम प्रारम्भ करेंगे।

स्वामी जी के अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण का प्रकाशन कोलकाता प्रवास में होता है। स्वामी जी का मानना, कहना था कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। उपयोगी और सही परामर्श कोई छोटा व्यक्ति भी दे तो स्वामी जी को उसे स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होता था। क्योंकि उनका मानना था ऐसा करने से व्यक्ति कोई छोटा नहीं हो जाता। सही सुझाव, सही बात किसी की तरफ से भी आ सकती है। कलकत्ते प्रवास में ही केशवचन्द्र सेन ने उनको दो सुझाव दिए। एक तो उनका कहना था कि आप भाषा में अर्थात् हिन्दी में बोलें तो अधिक से अधिक लोग आपकी बात समझ सकेंगे और इसमें यह भी है कि जब आप संस्कृत में बोलते हैं तो आपका आशय कुछ होता है और लोग उसको अपने हिसाब से परिवर्तित करके बता देते हैं। दूसरा सुझाव उनका था कि जनसभाओं में अगर आप वस्त्र पहनना प्रारम्भ करें तो ज्यादा ठीक रहेगा। स्वामी जी महाराज ने संन्यासियों की परंपराएँ और अन्य सारी चीजों पर ध्यान नहीं दिया, न इस पर कोई ध्यान दिया कि संस्कृत बोलने से उनके पांडित्य का प्रमाणन होता है, उन्हें ऐसी बातों की चिन्ता ही नहीं थी, वह तो सर्वकल्याण चाहते थे। केशवचन्द्र के दोनों सुझाव इस दिशा में उनको ठीक प्रतीत हुए और उन्होंने तुरन्त इन सुझावों को मान लिया।

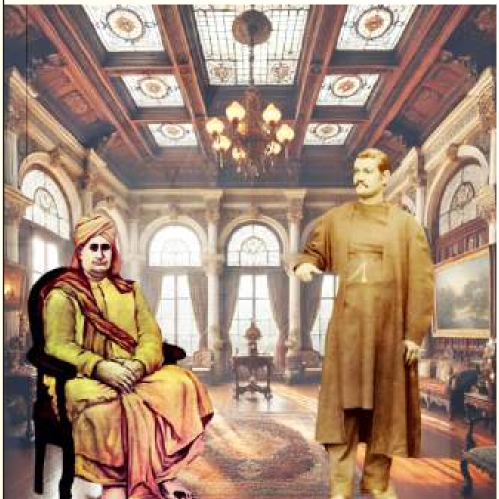

पश्चात् स्वामी जी पूर्ण वस्त्र पहनने लगे और उन्होंने हिन्दी को लेकर के तो जो कार्य आगे किया वह हिन्दी भाषा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। हिन्दी को जो बल स्वामी दयानन्द ने डेढ़ सौ वर्ष पूर्व दिया उसके समक्ष कोई भी खड़ा प्रतीत नहीं होता।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

आर्यसमाज गाँधीधाम द्वारा आर्यों के चार तीर्थधाम की यात्रा 6 से 9 मार्च 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती और आर्य समाज की स्थापना के १५०वें वर्ष के उपलक्ष्य में हाल ही में आर्य समाज गाँधीधाम ने आर्यों के 'चार तीर्थधाम यात्रा' का सफल आयोजन किया गया, जिसमें २० आर्य भाई बहनों के एक समूह ने ऋषि दयानन्द जी महाराज के स्मृति स्थल आबू पर्वत, उदयपुर, अजमेर व जोधपुर के दर्शनार्थ लगभग २००० किलोमीटर की यात्रा की। आर्य जगत् के जाने-माने कर्मयोगी श्री वाचोनिधि जी आचार्य, जिन्होंने जीवन प्रभात और अनेक प्रकल्पों की स्थापना कर विश्व भर में अपनी छाप छोड़ी है, उनके नेतृत्व में यह यात्रा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही। यात्रा के अन्तर्गत सर्वप्रथम, आर्यों के लिए गर्व लेने योग्य आवासीय शिक्षण संस्थान 'दयानन्द पैराडाइज स्कूल' आबूरोड पहुँचे। संस्था के संचालक समर्पित आर्य श्री मोतीलाल जी आर्य, श्री शान्तिलाल जी आर्य व प्रिंसिपल श्री प्रवीण कुमार जी सहित विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने हमारा हार्दिक स्वागत तिलक व उपवस्त्र से किया।

भोजनोपरान्त आबू पर्वत गए और वहाँ देलवाड़ा के पर्वतों में स्थित 'आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय' पहुँचे, जहाँ पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सहित ब्रह्मचारियों ने गुरुकुल के मुख्य द्वार पर स्वागत किया। विशाल और भव्य गुरुकुल परिसर में सौ से अधिक ब्रह्मचारी वेद व व्याकरण की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सायंकालीन संध्या के लिए पूज्य स्वामी जी हम सभी को पर्वतों के बीच नदी तट पर स्थित विशालकाय 'इंद्र शिला' पर ले गये। रात्रि के प्रथम प्रहर में वहाँ बैठकर हमने बहुत ही शान्त वातावरण में स्वामी जी के सान्निध्य में संध्या व ध्यान किया। उस दौरान आध्यात्मिक आनन्द व मानसिक शान्ति का जो अनुभव हुआ वह दिव्य है अवर्णनीय है।

तत्पश्चात् हम सभी नवलखा महल, उदयपुर पहुँचे। जहाँ सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ की रचना हुई थी। गुलाब बाग के परिसर में स्थित नवलखा महल तक हमने शोभायात्रा निकाली। महल के मुख्य द्वार पर न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, न्यास के पदाधिकारी श्री भवानी दास आर्य, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती ललिता मेहरा और न्यास की युवा शाखा की संयोजिका ऋचा पीयूष के नेतृत्व में NMCC के सदस्यों ने हमारा भावभीना स्वागत किया।

सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा संचालित इस केन्द्र का श्री अशोक आर्य जी ने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (NMCC) और सत्यार्थप्रकाश भवन के निर्माण सम्बन्धी जानकारी दी। भवन में स्थित प्रेरणा कक्ष, भगवान श्री राम व श्री कृष्ण का जीवन दर्शन, वेद वीथिका, देश के महान् सपूतों के चित्रों की प्रदर्शनी के बाद सोलह संस्कारों की प्रदर्शनी (संस्कार वीथिका) देखी। श्री अशोक आर्य जी ने बहुत ही रोचक ढंग से एक-एक संस्कार की जानकारी दी। उसके बाद हम सभी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र से सम्बन्धित प्रदर्शनी व चलचित्र देखा। सभी भाई-बहनों ने उन्मुक्त कण्ठ से इस प्रकल्प की प्रशंसा की। सबने मिलकर वहाँ संध्या के बाद भोजन किया।

श्री अशोक आर्य जी निरन्तर नवलखा महल को वैदिक विश्व का अनूठा केन्द्र बनाने के लिए संकल्पित हैं।

८ मार्च शनिवार को हम ऋषि दयानन्द की स्मृतियों की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण शहर अजमेर के लिए निकले। अजमेर हाईवे के बायपास के समीप भव्य आकार ले रहे ऋषि स्मृति स्थल 'STATUE OF TRUTH' 'सत्य की प्रतिमा' पहुँचने पर पहले से हमारा इंतजार कर रहे आर्यसमाज के इस ऐतिहासिक प्रकल्प से जुड़े समाजसेवी श्री सुभाष जी नवाल, अजमेर के पूर्व मेयर श्री सोमरत्न जी आर्य, पूर्व विधायक व भिनाय कोठी के अध्यक्ष श्री बाहेती जी तथा बहुत से कार्यकर्त्ताओं ने हम सभी यात्रियों का बहुत ही हर्ष व उल्लास के साथ पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया। आधुनिक आर्किटेक्चर शैली में निर्मित एवं रंग-रंगीले फूलों-पौधों व रोशनी से विकसित यह भव्य परिसर पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनने वाला है। यह भव्य स्थल करोड़ों रुपयों की लागत से MDH के कर्त्ताधर्त्ता महाशय राजीव गुलाटी जी के सहयोग से बन रहा है। MDH के सहयोग से बन रहे ६० फीट ऊँचा स्टैच्यू ऑफ सत्य (ट्रुथ) का अवलोकन कर सभी को अच्छा लगा, गर्व की अनुभूति हुई। यह १५० वर्षों में महर्षि जी को श्रद्धांजलि देने का एक अद्भुत प्रयास है। वहाँ से चलकर हम श्री सोमरत्न जी के निर्देशन में ऐतिहासिक भिनाय कोठी पहुँचे जहाँ ऋषि ने संसार को बहुत बड़ा सन्देश देते हुए अन्तिम श्वांस ली थी।

वहाँ से निकलकर हम महर्षि दयानन्द सरस्वती से जुड़े अजमेर स्थित हर एक स्थान पर गए जिसमें, केसरगंज के प्राचीन परोपकारिणी सभा भवन/कार्यालय, वैदिक यंत्रालय, विशाल दयानन्द बाजार, ऋषि के अन्त्येष्टि स्थल तथा अन्त में ऋषि उद्यान आनासागर के पूरे प्रांगण का भ्रमण किया।

८ मार्च शनिवार रात्रि को जोधपुर पहुँचकर 'महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास' के नवनिर्मित भवन में विश्राम किया। स्मृति भवन पर अपनी प्रशंसनीय सेवाएँ दे रहे आदरणीय श्री जयसिंह जी गहलोत, श्री यशपाल जी आर्य आदि सभी बन्धुओं ने साथ रहकर उस २०० वर्ष के प्राचीन भवन का अवलोकन करवाया। जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगभग साढ़े चार महीने के जोधपुर प्रवास के समय निवास किया था। उसका विकास पिछले १० वर्षों से वहाँ के पदाधिकारियों श्री किशनलाल गहलोत और उनकी टीम द्वारा किया जा रहा है।

ऋषि महिमा के गीत गाते हुए उन सभी का धन्यवाद करते हुए जुलूस आकार में हमने बहुत सारी ऊर्जा और प्रेरणा लेकर गाँधीधाम के लिए प्रस्थान किया।

श्री वाचोनिधि आचार्य के नेतृत्व में मोहनभाई जांगिड़, गुरुदत्त शर्मा और अखिलेश आचार्य सहित पूरे दल ने सक्रिय रूप से जिम्मेदारी निभाई।

रिपोर्ट द्वारा श्री मोहन लाल जांगिड; उपप्रधान-आर्यसमाज गाँधीधाम

समाचार

उदयपुर राजघराने के महाराणा अरविन्द सिंह मेवाड़ का देहावसान

उदयपुर के राज परिवार और नवलखा महल उदयपुर और इसके संचालक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का सम्बन्ध अथवा कहें कि आर्य समाज का सम्बन्ध एक शताब्दी से भी अधिक पुराना है। १० अगस्त १८८२ को आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती, उदयपुर महाराणा मेवाड़ सज्जन सिंह जी के आमंत्रण पर उदयपुर पधारे थे। और यहाँ लगभग साढ़े छः मास निवास कर, अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया था और यहीं पर अपनी

न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा लिखित पुस्तक दयानन्द दर्शन का विमोचन करते हुए श्रीजी हुज़ूर महाराणा अरविन्द सिंह जी मेवाड़

उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा का गठन किया था और अपने उत्तराधिकारी के रूप में इस सभा का प्रधान महाराणा सज्जन सिंह जी को बनाया था। इससे समझा जा सकता है कि महर्षि ने अपनी भविष्य की योजनाओं के केन्द्र में महाराणा सज्जन सिंह जी को सर्वथा उपयुक्त समझ लिया था। और महाराणा सज्जन सिंह जी ने भी अपने आपको इसी भाव से समर्पित कर दिया था।

स्वामी जी को महाराणा जी से अत्यन्त प्रेम था। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्थान की जगह पर लिखा 'महाराणा जी का उदयपुर।'

यह प्रगाढ़ सम्बन्ध, आशा यह थी कि देश में सूर्य के समान प्रकाश फैलाएगा, परन्तु होनी को कुछ और मंजूर था। उधर ३० अक्टूबर १८८३ में महर्षि जी ने नश्वर देह को त्याग दिया, तो देवदुर्योग से अगले ही वर्ष दिसम्बर १८८४ में महाराणा सज्जन सिंह जी ने नश्वर संसार से विदा ले ली और इस प्रकार से उदयपुर वह केन्द्र न बन सका जिसकी दयानन्द को आशा थी।

परन्तु राज परिवार से आर्य समाज का इस रूप में सम्बन्ध बना रहा कि कालान्तर में जब १९९२ में राज्य सरकार ने यह भवन नवलखा महल आर्य समाज को सौंपा, तब से लेकर अब तक उदयपुर राजघराने ने समय-समय पर इस न्यास के निवेदन पर पधार कर पुराने सम्बन्धों को ताजा करते हुए यहाँ की शोभाश्री में अभिवृद्धि की।

श्रीजी हुज़ूर महाराणा अरविन्द सिंह जी स्वयं यहाँ के कार्यक्रमों में पधारे और उनके सुपुत्र महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ भी और उनकी धर्मपत्नी महारानी कुमारी निवृत्ति देवी जी सपरिवार यहाँ आती रहीं। इन मधुर सम्बन्धों की स्मृति हृदय में लिए इस न्यास के सभी न्यासी अन्य विकल उदयपुर वासियों की भाँति ही शोक का अनुभव करते हैं। यद्यपि यह वियोग परमात्मा द्वारा उसी की व्यवस्था में निर्धारित होता है, हम उसमें कुछ नहीं कर सकते परन्तु फिर भी श्रीजी हुज़ूर महाराणा अरविन्द सिंह जी की स्मृति को सुदीर्घ करने में, स्थाई करने में, उनके सुकार्यों की सुगन्ध को विश्व में फैलाने में राजघराने द्वारा जो भी प्रयत्न किए जाएँगे यह न्यास उनके साथ खड़ा हुआ है।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन करने की क्षमता सभी परिवारजनों को प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

२१ मार्च २०२५ को अखिल भारतीय नवसंवत्सर समारोह समिति एवं नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर के तत्वावधान में विक्रम रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; गुलाबबाग और आलोक संस्थान; उदयपुर के साझे में विक्रम रंगोली प्रतियोगिता हुई। इसमें महिलाओं और बालिकाओं ने सड़क के दोनों ओर ७५ रंगोलियाँ बनाई। रंगोलियों में भारतीय संस्कृति की झलक और फाल्गुन के रंगों का सुन्दर संयोजन दिखा।

ओ३म्, स्वस्तिक, कलश, संस्कारों के प्रतीक चिह्न और पुष्प रचनाओं से भी रंगोलियाँ बनाकर भारतीय सभ्यता की गरिमा को दर्शाया गया। ऑनलाइन रंगोली प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें कई महिलाओं और बालिकाओं ने अपने घर-आँगन में रंगोली बनाई।

रंगोली कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर के अध्यक्ष अशोक आर्य रहे। अध्यक्षता अखिल भारतीय नववर्ष समारोह समिति के राष्ट्रीय सचिव डॉ. प्रदीप कुमावत ने की। आयोजन के दौरान नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की आभा आर्य, सरला गुप्ता, मंत्री भवानी दास आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, कोषाध्यक्ष नारायण लाल मित्तल, व्यवस्थापक बी.एल. गर्ग, पुरोहित नवनीत आर्य, एनएमसीसी संयोजिका ऋचा आर्य, दुर्गा गोरमात, आलोक संस्थान की बानी मजूमदार, शालिनी औदिच्य, नीलम नागर, ज्योति रावत, सुचिता झाला, शर्मिला जैन, ऋतु टांक आदि मौजूद रहे।

प्रतियोगिता में १७ वर्ष से कम और १७ वर्ष से ऊपर के दो समूह बनाए गए। इन दोनों ही समूहों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार न्यास की ओर से दिए गए। प्रतियोगिता की जज चित्रकला विशेषज्ञ श्रीमती रेणु वर्मा एवं आशा सिंह रही। न्यास की ओर से दोनों जजों को सत्यार्थ प्रकाश और मानव तू मानव बन पुस्तक देकर सम्मान किया गया। डॉ. प्रदीप कुमावत को न्यास की ओर से श्रुति सौरभ पुस्तक भेंट की गई। अल्पाहार के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारतीय मूल की अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विल्मोर, जो पिछले वर्ष जून से अन्तर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर कार्यरत हैं, की पृथ्वी पर वापसी की योजना बनाई

गई है। नासा और स्पेस एक्स ने उनकी वापसी के लिए १३ मार्च, २०२५ को क्रू-१० मिशन लॉन्च किया, जो नए अन्तरिक्ष यात्रियों को ISS पर भेजेगा। इन नए अन्तरिक्ष यात्रियों के आगमन के बाद, सुनीता विलियम्स और उनकी टीम के सदस्य पृथ्वी पर लौटेंगे।

ताजा जानकारी के अनुसार, सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की वापसी १६ मार्च, २०२५ को निर्धारित की गई है। उनकी वापसी स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल के माध्यम से होगी, जो फ्लोरिडा के तट पर अटलांटिक महासागर में लैण्ड करेगा।

इस मिशन के दौरान, सुनीता विलियम्स ने महिला अन्तरिक्ष यात्रियों में सबसे लम्बे समय तक ISS पर रहने और सबसे अधिक स्पेसवॉक करने के रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। यह मिशन न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों को दर्शाता है, बल्कि अन्तरिक्ष अनुसन्धान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान भी प्रदान करता है।

छपते-छपते- सुनीता विलियम्स और उनकी टोली सुकशल पृथ्वी पर आ चुकीं हैं। विश्व मानवता को बधाई।

वासन्ति नवसस्येष्टि पर्व पर पंचकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर-४, उदयपुर द्वारा श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य की अध्यक्षता में वासन्ती नवस्येष्टि पर्व पर यज्ञानुष्ठान और प्रवचन का आयोजन दिनांक १३ मार्च २०२५ गुरुवार को सम्पन्न हुआ। समाज के मंत्री डॉ. वेदमित्र

आर्य ने बताया कि पर्व विशेष के वैदिक मंत्रोचारण के साथ इन्द्रप्रकाश यादव द्वारा यज्ञ करवाया गया। सुमधुर भजन समाज के उपप्रधान कृष्ण कुमार सोनी और उपमंत्री सरला गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष अशोक आर्य ने अपने उद्‌बोधन में इस पर्व को कृषि प्रधान देश भारत में प्राचीन काल से बड़े स्तर पर यज्ञ कर पर्यावरण की शुद्ध करने और नई फसल को यज्ञ में समर्पित कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अनुष्ठान बताया। डॉ. वेदमित्र आर्य ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह पर्व परिवार और समाज को एक सूत्र में बाँधकर परस्पर प्रेम, बन्धुत्व और आनन्द को बढ़ाने वाला पर्व है। स्वागत समाज प्रधान भँवर लाल आर्य ने किया। यज्ञानुष्ठान के यजमान कृष्ण कुमार सोनी सपत्नीक, डॉ. प्रशान्त अग्रवाल एवं डॉ. प्रिया अग्रवाल, शारदा गुप्ता एवं श्रीमती उषा जी कोठारी, अमृतलाल तापड़िया एवं श्रीमती विमला तापड़िया, नरेन्द्र प्रसाद माथुर, चन्द्रकान्ता वैदिका, अल्का जैन, कपिल सोनी, सत्य प्रकाश शर्मा, भँवरलाल आर्य एवं विमला, प्रीती चौहान एवं चन्द्रकला आर्या, रमेश कुमार जायसवाल एवं प्रमिला, बलराम सिंह चौहान एवं नूतन चौहान, रामनिवास गदिया सपत्नीक, अम्बालाल सनाढ्य, हजारीलाल आर्य एवं आनंद राज जी माथुर, श्रवण कुमार वधवा एवं शीला वधवा, ललिता मेहरा एवं पुष्पा सिन्धी, ओमप्रकाश कुमावत एवं दुर्गा, हरिभाई सपत्नीक, दीनदयाल शर्मा एवं सुभाष कोठारी सपत्नीक, संजय शांडिल्य एवं मुकेश पाठक रहे। शान्ति पाठ, जयघोष और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- वेद मित्र आर्य; मंत्री-आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर

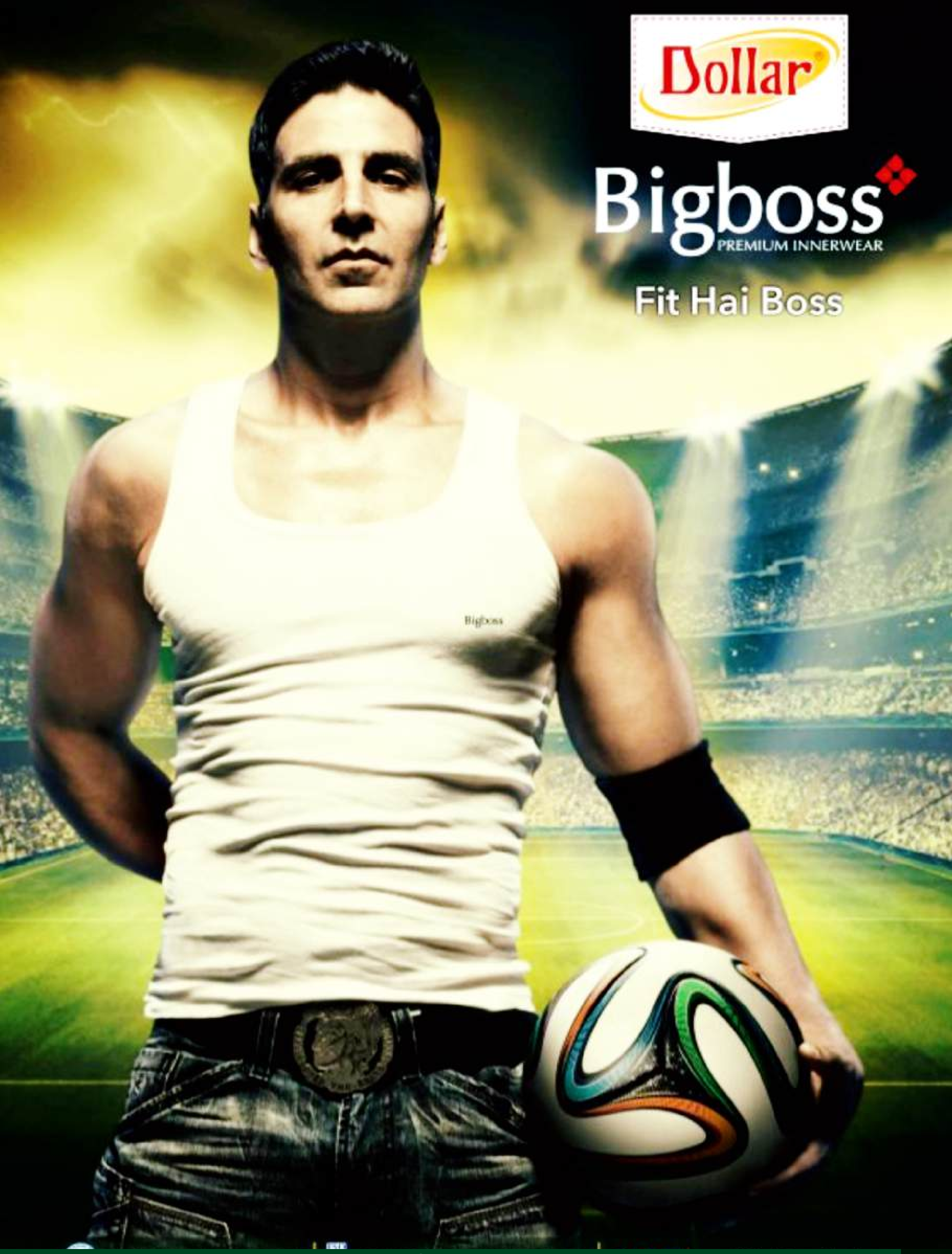
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

अनादि, सनातन, जीवरुप प्रजा के लिये वेद द्वारा परमात्मा ने सब विद्याओं का बोध किया है।

- सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास पृष्ठ २०९

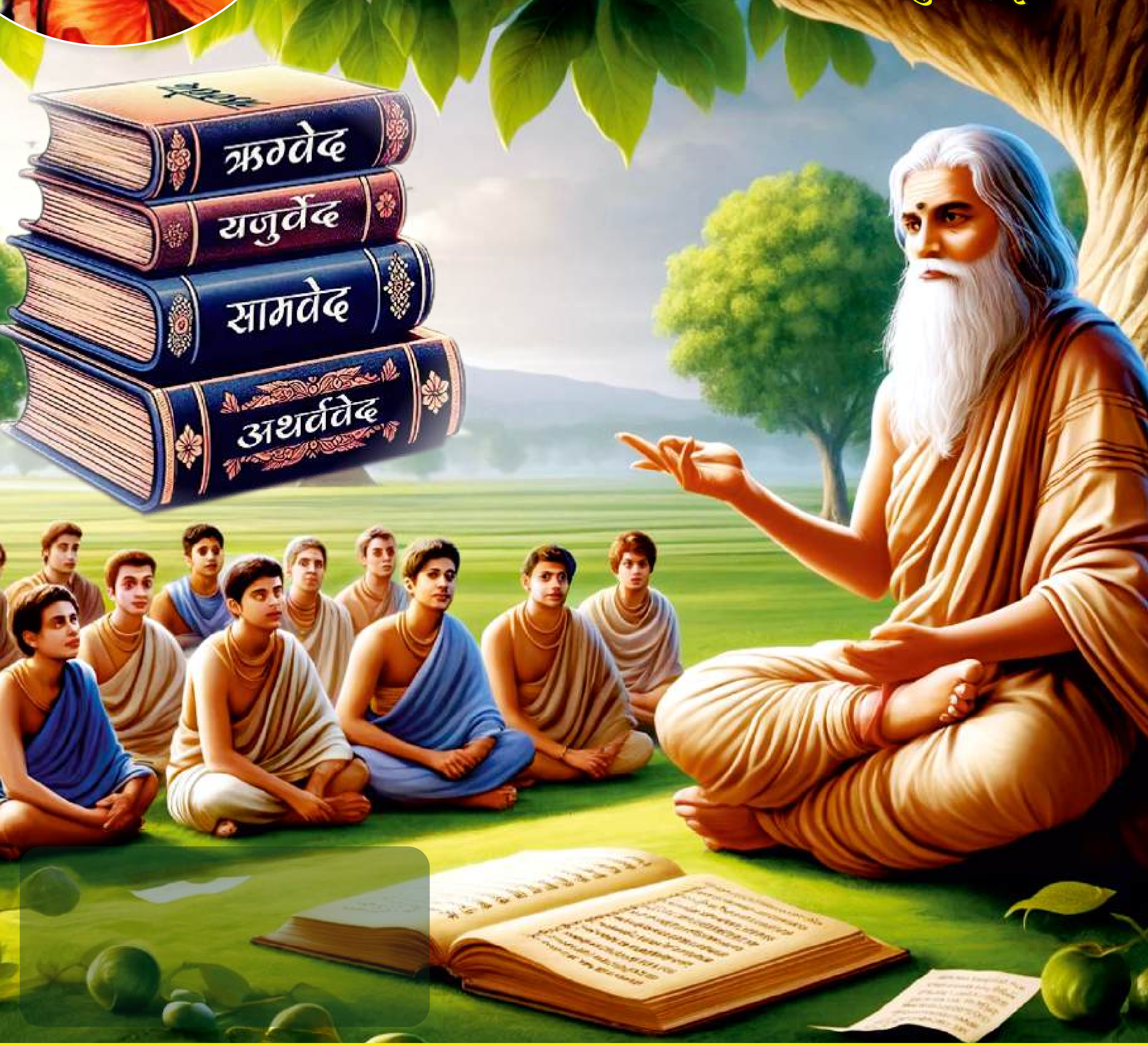

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर